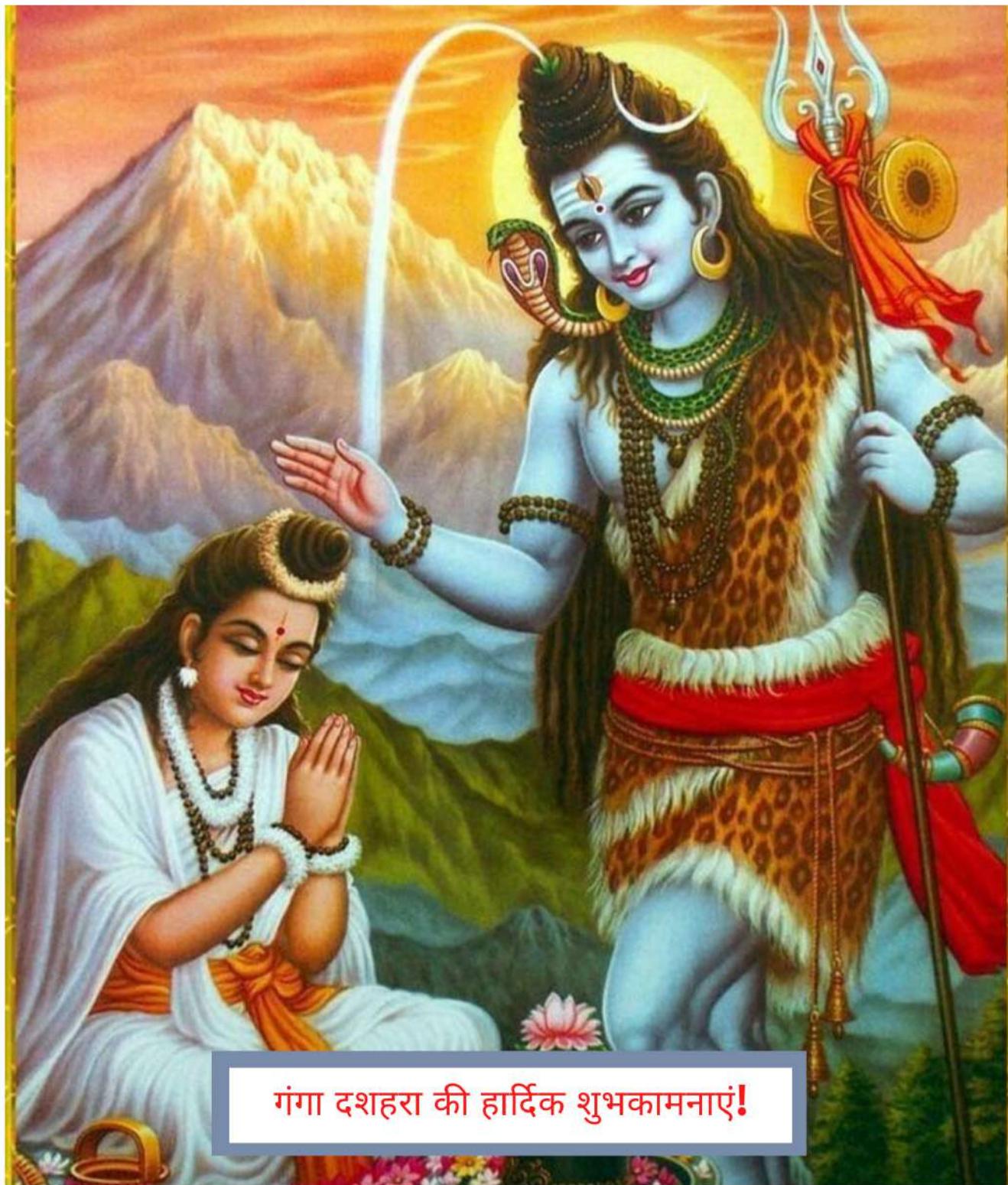


हंसलोक संदेश





हंसलोक संदेश

भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिक ज्ञान व सामाजिक एकता की प्रतीक

वर्ष-16, अंक-6

जून, 2025

ज्येष्ठ-आषाढ़, 2082 वि.स.

प्रकाशन की तारीख

प्रत्येक माह की 5 व 6 तारीख

मुद्रक एवं प्रकाशक-

श्री हंसलोक जनकल्याण समिति (रजि.)

श्री हंसलोक आश्रम, बी-18, (खसरा नं. 947),
छतरपुर-भाटी माइंस रोड, भाटी, महरौली,
नई दिल्ली-110074 के लिए मंगल द्वारा
एमिनेंट ऑफसेट, डी-94, ओखला इण्डस्ट्रियल
एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110020
से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया।

सम्पादक- राकेश सिंह

मूल्य-एक प्रति-रु.10/-

पत्राचार व पत्रिका मंगाने का पता:

कार्यालय: हंसलोक संदेश

श्री हंसलोक जनकल्याण समिति,

B-18, भाटी माइंस रोड, भाटी,

छतरपुर, नई दिल्ली-110074

संपर्क सूत्र-011-26652101/102

मो. नं. : 8800291788, 8800291288

Email: hansloksandesh@gmail.com

Website: www.hanslok.org

Subject to Delhi Jurisdiction

RNI No. DEL.HIN/2010/32010

संपादकीय

मनुष्य का दृष्टिकोण

स

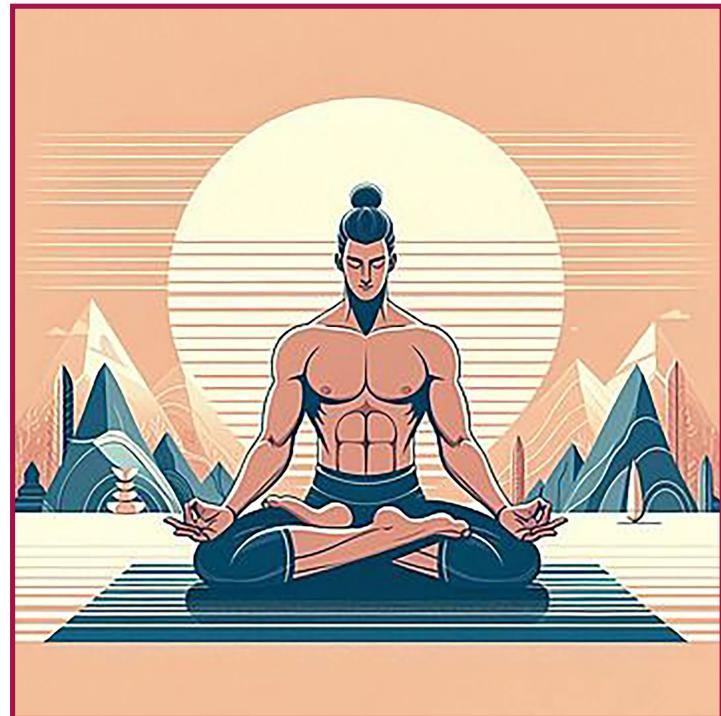
भी सांसारिक वस्तुएं, जैसे धन, संपत्ति और उपलब्धियां जड़ होती हैं। ये वस्तुएं खुद से कोई मूल्य नहीं रखतीं। उनका मूल्य और महत्व केवल हमारे विचारों, दृष्टिकोणों और सामाजिक मान्यताओं के जरिए निर्धारित होता है। हमारे तीन दृष्टिकोण होते हैं। पहला दृष्टिकोण स्वार्थ, जिसमें हम पदार्थ को किसी उद्देश्य या लालच से देखते हैं। अनर्थ की सोच, जिसमें हम यह आकलन करते हैं कि इस वस्तु से कोई अनिष्ट तो नहीं होगा, या हमारे लिए यह बिल्कुल ही निर्थक है। दूसरा परोपकार, जिसमें दूसरों का हित होता है। परोपकार की भावना से हमारे हृदय में सुख की अनुभूति होती है और उदारता की भावना पनपती है। परमार्थ रहित जीवन बिना पतवार की नौका के समान है। सच्चे आनंद की अनुभूति परमार्थ से ही शुरू होती है। हम मानव कहलाने के योग्य तब हैं, जब दूसरों के काम आएं। स्वार्थ, परार्थ और परमार्थ- सभी के लिए पदार्थ की आवश्यकता होती है। विडंबना यह है कि हमने तो जीवन ही पदार्थों के लिए समर्पित कर दिया है। भाईचारा, सुख-शांति और नैतिकता को दांव पर लगाकर हर प्रकार से धन कमाना ही जीवन का लक्ष्य बन गया है। संग्रह के लिए पागलपन बढ़ा, दुःख बढ़ा, अशांति बढ़ी। इसी से बैर और अभिमान बढ़ा है, लेकिन जीना है तो पदार्थों के साथ ही जीना पड़ेगा।

इस दुविधा को दूर करने के लिए हमारी संस्कृति ने एक रास्ता सुझाया है, और वह है- अर्जन के साथ विसर्जन। अपने लिए साधन जुटाएं और दूसरों की भलाई पर भी विचार करें। हमारे मन में यह बात गहरी बैठ गई है कि हमारे पास धन, यश और उपलब्धि तभी आ सकती है, जब हमारे हाथ में हर तरह के साधन हों। इसीलिए हम आत्मा को भुलाकर इन पदार्थों के पीछे दौड़ते रहते हैं। पदार्थ के प्रति हमारा आकर्षण तब खत्म होता है, जब जीवन का अंतिम चरण आता है। लेकिन तब तक हम इन पदार्थों से इतना अधिक चिपक चुके होते हैं कि उससे छुटकारा पाना मुश्किल हो जाता है। तब आत्म-कल्याण के लिए न वक्त रहता है, न समझ और न ही शक्ति। बुद्धिमानी इसी में है कि समय रहते स्वयं पर भरोसा करना सीख लें। यथार्थ को जानें कि मेरे लिए सब कुछ अनित्य है, एकमेव वह परमपिता परमात्मा ही नित्य और सनातन है। इसलिए उस सर्वशक्तिमान की ओर ही प्रवृत्त हों, यहीं हमारा सही दृष्टिकोण होगा। ■

‘योग’ से ही होता है शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास

योग शब्द संस्कृत मूल ‘युज’ से लिया गया है, जिसका अर्थ है ‘जुड़ना’ या ‘जोड़ना’ या ‘एकजुट होना’। योग अनिवार्य रूप से एक अत्यंत सूक्ष्म विज्ञान पर आधारित आध्यात्मिक अनुशासन है, जो मन और शरीर के बीच सामंजस्य लाने पर केंद्रित है। यह स्वस्थ जीवन जीने की एक कला और विज्ञान है। योग शास्त्रों के अनुसार योग का अभ्यास व्यक्तिगत चेतना को सार्वभौमिक चेतना के साथ जोड़ता है, जो मन और शरीर, मनुष्य और प्रकृति के बीच एक पूर्ण सामंजस्य का संकेत देता है। जो व्यक्ति अस्तित्व की इस एकता का अनुभव करता है, उसे योग में कहा जाता है, और उसे योगी कहा जाता है, जिसने मुक्ति, निर्वाण या मोक्ष के रूप में संदर्भित स्वतंत्रता की स्थिति प्राप्त की है। इस प्रकार योग का उद्देश्य आत्म-साक्षात्कार है, सभी प्रकार के कष्टों को दूर करना जो ‘मुक्ति की स्थिति’ ‘मोक्ष’ या ‘कैवल्य’ की ओर ले जाता है। जीवन के सभी क्षेत्रों में स्वतंत्रता के साथ जीना, स्वास्थ्य और सद्भाव योग अभ्यास के मुख्य उद्देश्य है। योग ने मानवता के भौतिक और आध्यात्मिक उत्थान दोनों को पूरा करने के लिए खुद को साबित किया है। बुनियादी मानवीय मूल्य ही योग साधना की पहचान है।

योग विद्या में, शिव को पहले योगी या आदियोगी और पहले गुरु या आदि गुरु के रूप में देखा जाता है। कई हजार साल पहले, हिमालय में कांतिसरोवर झील के तट पर, आदियोगी ने अपने गहन ज्ञान को सप्तर्षियों या ‘सात ऋषियों’ को दिया था। सप्तऋषि जिन्होंने भारतीय उपमहाद्वीप में यात्रा की, उन्होंने इस संस्कृति को एक मूल योगिक जीवन शैली के ईर्द-गिर्द गढ़ा। यह वह समय था जब योग का अभ्यास गुरु के प्रत्यक्ष मार्गदर्शन में किया जाता था और इसके आध्यात्मिक मूल्य को विशेष महत्व दिया जाता था। यह उपासना का एक हिस्सा था और योग साधना उनके अनुष्ठानों में अंतर्निहित थी। प्राणायाम दैनिक अनुष्ठान का एक हिस्सा था और आहुति देने के लिए किया जाता था। यद्यपि योग का अभ्यास पूर्व-वैदिक काल में भी किया जाता रहा, लेकिन महान ऋषि पतंजलि ने अपने योग सूत्रों के माध्यम से योग की तत्कालीन प्रचलित प्रथाओं, उसके अर्थ और उससे संबंधित ज्ञान को व्यवस्थित और संहिताबद्ध किया। पतंजलि



योग दिवस, 21 जून पर विशेष

के बाद, कई ऋषियों और योग गुरुओं ने अपनी अच्छी तरह से प्रलेखित प्रथाओं और साहित्य के माध्यम से इस क्षेत्र के संरक्षण और विकास में बहुत योगदान दिया।

भगवद् गीता में ज्ञान योग, भक्ति योग और कर्म योग की अवधारणा को विस्तृत रूप से प्रस्तुत किया गया है। पतंजलि के योग सूत्र में योग के विभिन्न पहलुओं को शामिल करने के अलावा, मुख्य रूप से योग के ‘अष्टांग योग’ के रूप में पहचाना जाता है। मन और शरीर दोनों को समता का अनुभव करने के लिए नियंत्रण में लाया जा सकता है।

गोरक्षशतकम् का षडंग-योग, हठयोगप्रदीपिका का चतुरंग-योग, घेरण्ड संहिता का सप्तांग-योग, हठ-योग के मुख्य सिद्धांत हैं।

आज के समय में, हर कोई स्वास्थ्य के संरक्षण, रखरखाव और संवर्धन के लिए योग अभ्यास के बारे में आश्वस्त है। कई लोगों के लिए, योग का अभ्यास हठ योग और आसन ‘मुद्राओं’ तक ही सीमित है। हालाँकि, योग सूत्रों में, केवल तीन सूत्र आसनों के लिए समर्पित हैं। मूल रूप से, हठ योग एक प्रारंभिक

प्रक्रिया है ताकि शरीर ऊर्जा के उच्च स्तर को बनाए रख सके। यह प्रक्रिया शरीर से शुरू होती है, फिर सांस, मन और आंतरिक स्व। योग को आमतौर पर स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती के लिए एक चिकित्सा या व्यायाम प्रणाली के रूप में भी समझा जाता है। जबकि शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य योग के प्राकृतिक परिणाम हैं, योग का लक्ष्य अधिक दूरगामी है। यह व्यक्तिगत ज्यामिति को ब्रह्मांड के साथ सेरेखित करने की तकनीक है, जिससे धारणा और सामंजस्य का उच्चतम स्तर प्राप्त होता है।

योग किसी विशेष धर्म, विश्वास प्रणाली या समुदाय का पालन नहीं करता है; इसे हमेशा आंतरिक भलाई के लिए एक तकनीक के रूप में देखा जाता है। कोई भी व्यक्ति जो योग का अभ्यास करता है, वह इसके लाभों को प्राप्त कर सकता है, चाहे उसकी आस्था, जातीयता या संस्कृति कुछ भी हो। स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती के लिए योगिक अभ्यास, व्यापक रूप से प्रचलित योग साधनाएँ हैं; यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि, बंध और मुद्राएँ, षट-कर्म, युक्ताहार, युक्ता कर्म, मंत्र जप आदि। यम संयम है और नियम पालन है। इन्हें योग साधनाओं के लिए पूर्व आवश्यकता माना जाता है। आसन, शरीर और मन की स्थिरता लाने में सक्षम हैं। विभिन्न शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, शारीरिक पद्धति को अपनाना है, जो शरीर की स्थिति, किसी के संरचनात्मक अस्तित्व के बारे में एक स्थिर जागरूकता को काफी लंबे समय तक बनाए रखने की क्षमता प्रदान करता है।

प्राणायाम में व्यक्ति की सांस के प्रति जागरूकता विकसित करना और उसके बाद श्वसन को व्यक्ति के अस्तित्व के कार्यात्मक या महत्वपूर्ण आधार के रूप में स्वैच्छिक रूप से विनियमित करना शामिल है। यह व्यक्ति के मन के प्रति जागरूकता विकसित करने और मन पर नियंत्रण स्थापित करने में मदद करता है। प्रारंभिक चरणों में, यह नासिका, मुँह और शरीर के अन्य छिंद्रों, इसके आंतरिक और बाह्य मार्गों और गंतव्यों के माध्यम से 'सांस अंदर और बाहर के प्रवाह', 'श्वास-प्रश्वास' के बारे में जागरूकता विकसित करके किया जाता है। बाद में, इस परिघटना को विनियमित, नियंत्रित और निगरानी वाली श्वास के माध्यम से संशोधित किया जाता है, जिससे शरीर के स्थान के भर जाने 'पूरक' के बारे में जागरूकता पैदा होती है, स्थान की भरी हुई अवस्था में बने रहने पर 'कुंभक' और विनियमित, नियंत्रित और निगरानी वाली श्वास 'प्रवास' के दौरान इसके खाली होने 'रेचक' के बारे में जागरूकता पैदा होती है।

प्रत्याहार, इंद्रियों से व्यक्ति की चेतना के पृथक्करण

'वापसी' को इंगित करता है जो व्यक्ति को बाहरी वस्तुओं से जुड़े रहने में मदद करता है। धारणा, शरीर और मन के अंदर के व्यापक क्षेत्रों को इंगित करती है; जिसे आमतौर पर एकाग्रता के रूप में समझा जाता है। ध्यान, शरीर और मन के अंदर केंद्रित ध्यान और समाधि का एकीकरण है। बंध और मुद्राएँ प्राणायाम से जुड़ी प्रथाएँ हैं। उन्हें मुख्य रूप से श्वसन पर नियंत्रण के साथ-साथ कुछ शारीरिक, मनोवैज्ञानिक-शारीरिक पद्धति को अपनाने पर आधारित उच्च योगिक क्रियाओं के रूप में देखा जाता है। ये मन पर नियंत्रण को और आसान बनाती हैं और उच्च योगिक उपलब्धि के लिए मार्ग प्रशस्त करती हैं। षट-कर्म विषहरण प्रक्रियाएँ हैं, जो शरीर में जमा विषाक्त पदार्थों को निकालने में मदद करती हैं और प्रकृति में नैदानिक हैं। युक्ताहार; स्वस्थ जीवन के लिए उचित भोजन और भोजन की आदतों की वकालत करता है। हालाँकि ध्यान का अभ्यास आत्म-साक्षात्कार में मदद करता है जो पारलौकिकता की ओर ले जाता है, जिसे योग साधना 'योग का अभ्यास' का सार माना जाता है।

योग व्यक्ति के शरीर, मन, भावना और ऊर्जा के स्तर पर काम करता है। इसने योग के चार व्यापक वर्गीकरणों को जन्म दिया है; कर्म योग, जहाँ हम शरीर का उपयोग करते हैं, भक्ति योग, जहाँ हम भावनाओं का उपयोग करते हैं; ज्ञान योग, जहाँ हम मन और बुद्धि का उपयोग करते हैं; और क्रिया योग, जहाँ हम ऊर्जा का उपयोग करते हैं। योग की प्रत्येक प्रणाली जिसका हम अभ्यास करते हैं, वह इनमें से एक या अधिक श्रेणियों के दायरे में आती है। प्रत्येक व्यक्ति इन चार कारकों का एक अनूठा संयोजन है। योग पर सभी ने इस बात पर जोर दिया है कि गुरु के निर्देशन में अभ्यास करना आवश्यक है। इसका मूल कारण यह है कि केवल एक गुरु ही चार मूलभूत मार्गों के उचित संयोजन को मिला सकता है, जैसा कि प्रत्येक साधक के लिए आवश्यक है। योग शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति, 'अस्तित्व' की देखभाल करना है। यह माना जाता है कि एक अच्छा, संतुलित, एकीकृत, सच्चा, स्वच्छ, पारदर्शी व्यक्ति स्वयं, परिवार, समाज, राष्ट्र, प्रकृति और मानवता के लिए अधिक उपयोगी होगा। योग शिक्षा 'अस्तित्व उन्मुख' है।

वर्तमान समय में योग साधना को सार्थक जीवन जीने के लिए रामबाण माना जाता है। आजकल, दुनियाभर में लाखों-करोड़ों लोग योग के अभ्यास से लाभान्वित हुए हैं, जिसे प्राचीन काल से लेकर आज तक महान योग गुरुओं द्वारा संरक्षित और बढ़ावा दिया गया है। योग का अभ्यास फल-फूल रहा है, और हर दिन अधिक जीवंत होता जा रहा है। ■

जाकी गांठी नाम है, ताकी हैं सब सिद्धि

परमसंत सद्गुरुदेव श्री हंस जी महाराज

प्रे मी सज्जनो! वर्तमान समय के डॉक्टर, वैद्य और हकीम का बहुत बड़ा महत्व है, क्योंकि वे ही वर्तमान में मनुष्य का इलाज कर सकते हैं। जो डॉक्टर, वैद्य और हकीम अब इस दुनिया में नहीं रहे, वे मनुष्य का वर्तमान में इलाज करने नहीं आ सकते। इसी तरह से जो समय के यानि वर्तमान के संत-महापुरुष और सद्गुरु होते हैं, वे ही अज्ञानता के अंधकार में फंसे मनुष्य को आत्मज्ञान देकर उसके जीवन को धन्य कर देते हैं। इस समय में जो भी सच्चा संत होगा, सद्गुरु होगा, वही तुम्हारी सहायता कर सकेगा, तुम्हें ज्ञान के मार्ग पर लगा सकेगा। पूर्व में जो संत-महात्मा और सद्गुरु आये थे, वे अब नहीं हैं। उनका नाम लेकर रटते रहने से कुछ नहीं मिलेगा। इसलिए वर्तमान के संत-महापुरुषों के पास जाओ, सद्गुरु के पास जाओ और उनसे उस आत्मतत्त्व के बारे में पूछो। कहा है-

**जाति न पूछिये साधु की,
पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का,
पड़ी रहन दो म्यान॥**

आत्मज्ञान को जानने की इच्छा रखने वाले मनुष्य को साधु की जाति नहीं, बल्कि उनसे ज्ञान के बारे में पूछना चाहिए। साधु-संतों की पहचान जाति या पहनावे से नहीं, बल्कि ज्ञान से होती है। मीराबाई ने संत रैदास को अपना गुरु बनाया। उसने भजन में कहा-

मोहे गुरु मिले रैदास,

पिया घर ना जाऊ।

संत-महापुरुष हमेशा जाति-पाति के बंधन से ऊपर होते हैं। वे किसी भी तरह के संकीर्ण दायरे में नहीं फंसते। मैंने एक पंडित को उपदेश दिया। वह मुझे

से उसके अन्दर था। मैंने कोई तुम्हारा वेद-मंत्र तो उसे बताया नहीं कि जो वह अपवित्र हो गया।

मैं काशी में गया। वहां काशी विश्वनाथ का मन्दिर है। किसी ने कहा कि उसमें दलित चले गए, इसलिए वह अपवित्र हो गया। मैंने जब सुना, तो मैं रोने लगा कि हे भगवान, मैंने तो सुना था-

**सुमिर पवन सुत पावन नामू।
अपने वश करि राखेउ रामू॥**

प्रभु का नाम पावन है, लेकिन जब दलितों के प्रवेश करने से काशी विश्वनाथ ही अपवित्र हो गया, तो फिर तो दलित ही बड़े हो गए और काशी विश्वनाथ छोटे रह गये। ऐसी अन्धी है ये दुनिया। फिर सुनते हैं करपात्री जी ने बड़े-बड़े लोगों से चन्दा इकट्ठा किया और एक दूसरा मन्दिर बनवाया जिसमें दलित अन्दर नहीं जा सकते; तो ऐसी अन्धी है ये दुनिया।

देखो, भगवान का नाम अत्यंत पावन है। भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को समझाते हुए कहते हैं कि अंत समय में जो मेरे नाम का सुमिरण करते हुए शरीर को छोड़ता है, वह निश्चित रूप से मुझे ही प्राप्त होता है। कहने का मतलब नाम का सुमिरण करने से ही तो भगवान मिलते हैं और नाम का सुमिरण मनुष्य करना नहीं चाहता। धर्मशास्त्रों में चार प्रकार के भक्त बताये गये हैं। एक ज्ञानी, दूसरा जिज्ञासु, तीसरे वे भक्त जो भगवान से कुछ मांगने के लिए नाम का सुमिरण करते हैं कि हे प्रभु! मेरी नौकरी लग जाये और चौथे



शिमला ले गया, वहां एक सन्तु नाम का सफाई कर्मचारी था। वह अलग बैठकर सत्संग सुनता था। एक दिन उसने कहा कि सबमें भगवान है, तो क्या मेरे हृदय में भी है और क्या मैं भी उसे देख सकता हूँ? तो मैंने उसको भी उपदेश कर दिया। वह पंडित बड़ा कटूर सनातनी था, उसको जब मालूम हुआ, तो कहा कि यह क्या बात है? आप मेरे भी गुरु हैं और सन्तु के गुरु बने भी बैठे हैं। मैंने पंडित से कहा कि उस सफाई कर्मचारी को उपदेश करके वही बताया जो पहले

वे भक्त जो दुःखी होते हैं, वे भगवान के नाम को जपते हैं कि हे भगवान, मेरा रोग दूर कर दो या मेरी यह तकलीफ दूर कर दो। तो इस तरह चार प्रकार के भक्त बताये।

**राम भक्त जग चारि प्रकारा।
चहुं चतुरन कहं नाम अधारा ॥
उनमें ज्ञानी मोहिं विशेष पियारा।**

चारों प्रकार के भक्तों का सहारा वही प्रभु का नाम है। आजकल लोग गौरक्षा की बात बहुत करते हैं, लेकिन मैं पूछता हूँ कि तुमने कितनी गौएं पाल रखी हैं? गाय के रोम-रोम में 33 कोटि देवता बताये हैं और उसका दर्शन करने से बड़ा फल मिलता है, लेकिन तुमने कितनी गौएं पाली हैं? हमारे पास कामधेनु गौ है, जो इच्छा करो, वही देती है। तुम्हारे पल्ले में भी कामधेनु है-

**जाकी गांठी नाम है,
ताकी हैं सब सिद्धि।
हाथ जोड़ ठाढ़ी रहें,
अष्ट सिद्धि नवनिधि॥**

**गुरु समर्थ सिर पर खड़े,
कौन कमी तोहि दास।
ऋद्धि, सिद्धि सेवा करें,
मुक्ति न छांड़े साथ।**

कहीं पर भी हमारा शरीर छूट जाय, हम भगवान को ही मिलेंगे; क्योंकि हम अन्तरात्मा से भगवान में मिल चुके हैं। हमारी अन्तरात्मा से उसी का सुमिरण होता है।

भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को समझाते हुए कहते हैं कि हे अर्जुन, तू मुझे अपने इन नेत्रों से नहीं देख सकता, क्योंकि इन नेत्रों से तो आकाश, वायु, अग्नि, जल पृथ्वी और मन, बुद्धि तथा अहंकार इन आठ तत्वों से बना हुआ शरीर ही दीखता है और मैं सत-चित-आनन्द हूँ, जो इसके

अन्दर निवास करता हूँ। इन आँखों से तू मुझे नहीं देख सकेगा, इसलिए मैं तुझे दिव्य नेत्र देता हूँ। उससे तू मेरे ऐश्वर्य को देख। तो वह दिव्य नेत्र कहाँ है? किस दूकान में मिलता है? कोई बतावे न? अरे! वह दिव्य नेत्र भी तुम्हारे अन्दर ही है। संत तुलसीदास जी कहते हैं-

**घट में है सूझे नहीं,
लानत ऐसी जिन्द।**

**तुलसी या संसार को,
भयो मोतिया बिन्द।
तुम्हारे अन्दर ही है वह सत-चित-
आनन्द-स्वरूप भगवान, पर तुमको**

इस समय में जो भी सच्चा संत होगा, सद्गुरु होगा, वही तुम्हारी सहायता कर सकेगा, तुम्हें ज्ञान के मार्ग पर लगा सकेगा। पूर्व में जो संत-महात्मा और सद्गुरु आये थे, वे अब नहीं हैं। उनका नाम लेकर रटते रहने से कुछ नहीं मिलेगा। इसलिए वर्तमान के संत-महापुरुषों के पास जाओ, सद्गुरु के पास जाओ और उनसे उस आत्मतत्व के बारे में पूछो।

करोगे, तो शुरू हो जायेगा और उच्चारण बन्द कर दोगे, तो खत्म हो जायेगा। इस तंत्र-मंत्र के जपने से तुम्हारी गति नहीं होगी। सद्गुरु महाराज की शरण में जाकर भगवान के उस सच्चे नाम का ज्ञान प्राप्त करो, जो तुम्हारे ही अंदर है। उस नाम का सुमिरण करने से ही तुम्हारे जीवन का कल्याण होगा।

श्रीमद्भगवद् गीता में भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को समझाते हुए कहते हैं कि अंत समय में शरीर को छोड़ते हुए जो मेरे नाम का सुमिरण करता है, वह मेरे को निःसन्देह प्राप्त होता है। विचार

करने की बात है कि जब भगवान के नाम को जाना ही नहीं, तो आखिरी समय में भगवान के नाम का सुमिरण कैसे होगा? यदि उस नाम को नहीं जाना, तो तुम्हारा वेद-शास्त्र और बड़े-बड़े ग्रन्थों को पढ़ना, पूजा-पाठ-हवन इत्यादि करना, सब बेकार चला गया; क्योंकि आखिरी समय में तुमसे इन मन्त्रों का उच्चारण नहीं हो सकेगा। उस समय न तुम

माला फेर सकोगे, न मन्दिर-मस्जिद जा सकोगे और न मन्त्रों का उच्चारण कर सकोगे। तुम कहते हो कि आखिरी समय में भगवान के नाम को जान लेंगे, अभी तो खूब खाओ, पिओ और मौज उड़ाओ। तो उसके लिए भगवान श्रीकृष्ण फिर समझाते हैं कि जीवन काल में जिस मनुष्य अथवा वस्तु की याद सबसे ज्यादा आती है, मरण काल में भी उसी की याद आती है। इसलिए हे अर्जुन! तू सब काल में निरन्तर मेरा सुमिरण भी कर और युद्ध भी कर। उस समय जिस बहाने भी, जहां भी तेरा शरीर छूटेगा, तू मेरे को ही मिलेगा। तो भाई, अगर परमात्मा को मिलना है, तो निरन्तर उसके नाम

**एको सिमरो नानका,
जल थल रह्यो समाय।
दूजा काहे सिमरिये,
जम्मे ते मर जाय॥
तुम जब कोई तंत्र-मंत्र जपना शुरू**

का सुमिरण करना चाहिए। भगवान के नाम का सुमिरण और भजन कैसे किया जाता है, उस विधि को संत-महापुरुषों, सद्गुरु महाराज की शरण में जाकर विनयपूर्वक पूछना चाहिए। भगवान के उस सच्चे नाम को जानना चाहिए।

जिस नाम को जानने के लिए मैं कहता हूं, वही आदि नाम है, भगवान का वही सच्चा नाम है। यदि उसको तुम जान लोगे और सुमिरण करोगे, तो तुम्हारा मोक्ष हो जाएगा। वह कौन-सा नाम है? गीता तुम पढ़ते हो, लेकिन भगवान का नाम पढ़ने-लिखने में आने वाला नहीं है, वह भाषा का विषय नहीं है। अगर वह नाम पढ़ने-लिखने का विषय होता, तो पढ़े-लिखे तो मुक्त हो जाते और अनपढ़ कभी मुक्त नहीं हो पाते। भिलनी कभी मुक्ति को प्राप्त नहीं कर पाती। और भी कई ऐसे भक्त हुए हैं, जो पढ़ना-लिखना नहीं जानते थे। संत तुलसीदास जी कहते हैं-

**भक्ति सुतंत्र सकल सुख खानी।
बिनु सत्संग न पावइ प्रानी॥**

मैंने एक विद्वान महाशय से पूछा कि भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे अर्जुन! मैं तुझे एक ऐसी बात बताऊँगा, जो बहुत ही गुप्त है और जिसे जान लेने मात्र से तू अशुभ से छूट जायेगा। तो वह क्या चीज है, जो भगवान ने अर्जुन को बतलायी? इस पर वे महाशय बोले कि वह ब्रह्मज्ञान की बात है। जब तुम्हें ब्रह्मज्ञान हो जायेगा, तो मुक्त हो जाओगे। तो मैंने उनसे कहा कि इसमें आगे लिखा है-

**राजाविद्या राजगुह्यं,
पवित्रमिदमुत्तमम्।
प्रत्यक्षावगमं धर्म्य,
सुसुखं कर्तुमव्ययम्॥**
वह राजाविद्या है, सब विद्याओं का

राजा है, राजगुह्यं, सब गोपनीयों (गुप्त) चीजों का भी राजा है, उससे ज्यादा गुप्त और कोई चीज नहीं है, पवित्र है, उत्तम है, अविनाशी है, उसका कभी नाश नहीं होता। तो कहने लगे कि यह ब्रह्मज्ञान ही है, यही ब्रह्मज्ञान सब विद्याओं का राजा है और सब गोपनीयों का राजा है। यही सबसे पवित्र है और सबसे उत्तम है। मैंने कहा ठीक है, लेकिन आगे कहा है कि साधन करने में अत्यन्त सुगम और प्रत्यक्ष फल देने वाला है। ब्रह्मज्ञान तो

है और फिर गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने बताया है कि इस तत्त्वज्ञान रूपी धर्म में जिसकी श्रद्धा नहीं है, वह मेरे को कभी नहीं मिल सकता। वह सदा चौरासी में ध्रमण करता रहेगा। आज अगर मान लो कोई भीख मांगने वाला है, वह सपने में चक्रवर्ती राजा बन जाए, तो आंख खुलने पर फिर वही भिखारी ही रहेगा या कोई चक्रवर्ती राजा सपने में भिखारी हो गया, तो आंख खुलने पर चक्रवर्ती राजा ही तो रहेगा?

इसी तरह से आजकल के ये जो ब्रह्मज्ञानी हैं, वे भगवान को भूले हुए हैं, उनके लिए यह स्वप्न है। जब उनकी मौत होगी, तो फिर पहले की तरह वैसे ही चौरासी में चक्कर लगाते रहेंगे। कभी गधा बनेंगे, कभी कुत्ता बनेंगे और कभी घोड़ा बनेंगे; क्योंकि फिर इन्हें कोई भी चौरासी से नहीं छुड़ा सकता, केवल एक प्रभु की भक्ति है, जो इन्हें चौरासी से छुड़ा सकती है। तो ऐसी है प्रभु की भक्ति, जिसकी महिमा स्वयं भगवान ने गायी। भक्ति जो है, वह स्वतन्त्र है। वेद पढ़ने की, यज्ञ करने की या दान-पुण्य आदि करने की, कोई विद्या पढ़ने की जरूरत नहीं है। भक्ति हर एक आदमी कर सकता है, प्रभु के नाम का सुमिरण कर सकता है। कहा है-

**लेने को हरि नाम है,
देने को अन्नदान।**

**तरने को आधीनता,
दूबन को अभिमान।**

मनुष्य को कभी अभिमान नहीं करना चाहिए क्योंकि वह उसको डुबा देता है। इसलिए संसार में रहकर परोपकार करते रहें और प्रभु का भजन-सुमिरण भी करते रहें, इसी से हमारी आत्मा का सही मायने में भला होगा।

आत्मज्ञान जानने पर ही होता है जीवन सफल

श्री भोले जी महाराज

प्रेमी सज्जनों! भगवान को प्राप्त करने के लिए आज सभी लोग हाथ की माला को फेरने में लगे हैं, लेकिन ऐसा करने से भगवान की प्राप्ति नहीं होगी। संत कबीर दास जी कहते हैं-

माला फेरत युग गया,
पाया न मन का फेर।
कर का मणका डार दे,
मन का मणका फेर॥

हाथ की माला को फेरते-फेरते युग बीत गया, लेकिन मन का पार नहीं पा सके, भगवान को प्राप्त नहीं कर सके। इसलिए हाथ की माला को छोड़कर मन की माला को फेरना है। उन्होंने आगे फिर कहा-

तंत्र मंत्र सब झूठ हैं,
मत भरमो संसार।
सार शब्द जाने बिना,
कोई न उतरसी पार॥

जितने भी बाहरी तंत्र-मंत्र हैं, वे सब झूठे और भ्रमित करने वाले हैं। मनुष्य को कभी भी तंत्र-मंत्र के भ्रमजाल में नहीं फँसना चाहिए, बल्कि जो सार शब्द है, संत-महापुरुषों से उसको जानना चाहिए। सार शब्द को जाने बिना कोई भी मनुष्य मायारूपी भवसागर से पार नहीं हो सकता, उसको मोक्ष गति नहीं मिल सकती है। संत कहते हैं कि भगवान की असीम कृपा से यह मनुष्य शरीर मिला है, यह तन बार-बार नहीं मिलता है। इसलिए मनुष्य तन की कदर करो। जब बच्चा मां के गर्भ में होता है, तो भगवान से वायदा करता है, प्रार्थना करता है कि मुझे इस कष्ट से बाहर निकालो, बाहर जाकर मैं तुम्हारा भजन करूँगा। लेकिन जैसे ही वह संसार में आता है, बड़ा होता



है, तो मोह-माया के नशे में पड़कर प्रभु से किये वायदे को भूल जाता है। हमारी उम्र कब बीत जाय, कब मौत हो जाये, इसका कुछ नहीं पता। जीवन की डोर हमारे हाथ में नहीं है, यह तो विधाता के हाथ में है। इसलिए हमें जो देव-दुर्लभ मनुष्य शरीर मिला है, इसमें हमें भगवान के नाम को जानकर भजन-सुमिरण करना चाहिए। बहुत से लोग कहते हैं कि अभी क्या जरूरी है, भजन तो बुढ़ापे में कर लेंगे। लेकिन यह कोई जरूरी नहीं है कि बुढ़ापे में ही मौत आये, मौत कभी भी, कहीं भी आ सकती है।

एक सेठ जी एक बार सत्संग में गये। वहां उनको एक ही बात समझ में आई कि आइये, बैठिये और जाइये। घर आकर जब सो गये, तो स्वप्न में उनको सत्संग का ख्याल आया। उधर चोर उनके घर में चोरी करने आया। सेठ सोते-सोते बोले कि आइये! चोर सोचने लगा कि कहीं सेठ जी जगे तो नहीं हैं। चोर तब तक अंदर आ गया। फिर वह सेठ बोले, बैठिये! उस चोर को शंका

हो गयी कि शायद, सेठ जी ने उन्हें देख लिया है। वह सेठ जी के पैर पकड़ कर कहने लगा, मुझे क्षमा करें। जब सेठ जी की आंख खुली, तो बोले यह क्या? वह बोला- सेठ जी, मैं चोर हूँ। मैं यहां पर चोरी करने आया था। आपने मुझे रंगे हाथों पकड़ लिया।

सेठ जी ने सोचा, देखो मैंने सत्संग में तीन ही बातें सुनी थीं कि आइये, बैठिये और जाइये। इन्हीं बातों के कारण मेरा धन बच गया। इसी प्रकार यदि मैं सत्संग में अधिक समय तक जाता रहता, तो मुझे बहुत लाभ होता। मेरा यह जन्म और अगला जन्म भी सुधर जाता, सफल हो जाता। इस सपने का सेठ जी पर बहुत असर पड़ा और फिर सेठ जी ने आत्मज्ञान को जाना।

इस प्रकार जो सच्चे संत-महापुरुष होते हैं, वे सत्संग एवं अध्यात्म ज्ञान के द्वारा मनुष्य की आत्मिक चेतना को जगाने का प्रयास करते हैं। हमें उनसे आत्मज्ञान को जानकर भजन-सुमिरण करना चाहिए।

मानव के कल्याण के लिए ही आते हैं महापुरुष

माताश्री राजेश्वरी देवी

प्रेमी सज्जनो! इतिहास साक्षी है कि भारतभूमि में महान् शक्तियों ने जन्म लिया, महापुरुषों ने जन्म लिया और इसी भूमि से देश-विदेशों में ज्ञान का प्रकाश फैला। आज भारत के लोग अपनी पवित्र भूमि को भूल चुके हैं। इस देश में बहुत-सी चीजें बिना एयरकन्डीशन के उगती रहती हैं, लेकिन बहुत से ऐसे देश हैं, जहाँ कि एयरकन्डीशन के बिना कुछ होता ही नहीं है और वहाँ का मनुष्य एयरकन्डीशन के बिना नहीं रह सकता है। वहाँ के मनुष्य के लिए कार एयरकन्डीशन चाहिए, मकान एयरकन्डीशन चाहिये, कार्यालय भी एयरकन्डीशन चाहिए और एयरपोर्ट भी एयरकन्डीशन चाहिए। मतलब कि इस तरह से उन लोगों ने शरीर को स्वस्थ रखने के साधन बनाये हुए हैं। शरीर को सुखी रखने के साधन तो उन लोगों ने पूरे कर लिये हैं, लेकिन उनसे पूछो कि तुम्हें मन की शान्ति है क्या? तो कहते हैं कि मन हमारा बहुत अशान्त है, अभी तक हम शान्ति को प्राप्त नहीं कर सके और हम शांति की तलाश में हैं।

इसीलिए सन्तों ने बताया कि शान्ति कहीं बाहर नहीं बल्कि मानव के हृदय के अंदर है। जब तक आत्मज्ञान को जानकर भजन नहीं करोगे, तब तक शान्ति हो ही नहीं सकती। जब माँ के गर्भ में भी भगवान जीव को पूरी खुराक पहुँचाता है, तो क्या बाहर आकर वह इतना वैरी बन चुका है, जो हमको कोई चीज देगा ही नहीं? नहीं, भगवान तो हमें सब कुछ देता है। पर देखो, वास्तव में मनुष्य का मन गन्दा हो गया है। मनुष्य का मन माया में इतना वशीभूत हो गया है कि इसके कारण मनुष्य मानव को मानव नहीं समझता है। वास्तव में मनुष्य राक्षस-वृति में ढलता जा रहा है। इस तरह से देश में शान्ति कैसे होगी? इस तरह से तो शान्ति नहीं हो सकती है। जैसे हर मनुष्य अपने परिवार

को अच्छा बनाना चाहता है, इसी तरह से देश के हर व्यक्ति की अच्छी भावना रहेगी, तभी हमारा देश सुखी हो सकता है। आज संसार में हर मनुष्य दुःखी है, कोई अपने को सुखी महसूस नहीं करता। आज न तो धनवान ही सुखी है और न निर्धन तो सूखी रोटी खा सकता है, पर धनवान तो खा भी नहीं सकता। आखिर हमारी ऐसी गति कैसे हुई? जिन रास्तों से शान्ति को प्राप्त करना था, उस मार्ग को हमने दूर

छोड़ दिया। स्कूलों में बच्चों को आध्यात्मिक शिक्षा नहीं दी जाती। कबीर साहब का दोहा भी ठीक से बच्चों को नहीं समझाया जाता है। दोहे में लिखा है कि मन की माला फेर, यानि जो यह हाथ की माला फेर रहे हो, इसको फेरते-फेरते तो कई जन्म बीत गये, जो मन के अन्दर माला फिर रही है, उस माला को फेरो, मन की माला को समझो। कबीर के एक दोहे का अर्थ अध्यापक बच्चों को नहीं समझा सकते हैं। तो इस तरह से संसार में दुःख ही दुःख है, इस जीवन में सुख नहीं है। कई बार प्राकृतिक प्रकोप होते हैं, अकाल पड़ते हैं, असमय भयंकर वर्षा होती है, जिससे कि अनाज खत्म हो जाता है। फसलों को उपजाने के लिए बारिश की भी जरूरत होती है। यदि बारिश नहीं होगी, तो किसान कहाँ से कमायेगा और कहाँ से आप लोगों को अनाज सप्लाई करेगा। पेट भरने के लिए आखिर अनाज तो सबको चाहिए। हमारे गुरु महाराज जी जो ज्ञान देते हैं, मैं सच कहती हूँ कि उसने लाखों लोगों के जीवन को बदला है। जैसे सुखी खेती में तत्काल पानी



पड़ जाये, बारिश हो जाये, तब वह खेती हरी-भरी हो जाती है। ऐसे ही सत्संग और ज्ञान के अभाव में जो लोग अपने जीवन से हताश हो गये थे, उनके जीवन सत्संग से फिर से हरे-भरे हो गये हैं। जो लोग अपने सिद्धान्तों के अनुसार नहीं चलते हैं, वे जीवन में दुःख ही पाते हैं। आप लोगों को गुरु महाराज जी ने महात्माओं के द्वारा ज्ञान दिलाया है। वह ज्ञान, भगवान का सच्चा नाम तुम्हारे हृदय में है, फिर भी तुम दुःखी हो, क्योंकि तुमने नाम-सुमिरण में मन को नहीं लगाया। तुम्हारी वृत्तियाँ और तुम्हारा मन बाहर जा रहा है। देखो, एक छोटी क्लास का विद्यार्थी होता है, तो अध्यापक के द्वारा उसको ए बी सी डी और अ आ ई का ज्ञान कराया जाता है। अध्यापक के बिना वह विद्यार्थी किताबी ज्ञान को नहीं सीख सकता है। इसी तरह से गुरु महाराज जी का जो ज्ञान है, सचमुच में उससे हृदय में बड़ी शान्ति मिलती है। श्री हंस जी महाराज जी का जीवन अनेक कठिनाइयों और संघर्षों में बीता, लेकिन वे सत्य और धर्म के मार्ग से कभी भी विचलित नहीं हुए।

श्री हंस जी महाराज ने कठोर परिश्रम करके लाखों लोगों को अध्यात्म ज्ञान देकर सत्य एवं धर्म के मार्ग पर लगाया।

श्री हंस जी महाराज कहते थे कि मेरे रहते लाखों लोगों को यह ज्ञान मिल चुका है। पर वास्तव में जब लोगों की करनी देखो, लोगों की कमाई देखो, तो जीरो-बटा-जीरो यानि शून्य। लोग जीवन में भौतिक उन्नति तो बहुत कर लेते हैं, बड़े-बड़े बंगले बना लेते हैं, बड़ी-बड़ी हासिल कर लेते हैं, पर जब ज्ञान मार्ग पर चलने की बात हो, तो जीरो-बटा जीरो। नारी हो या पुरुष हो, सब वहीं के वहीं हैं। इसलिए वे अपने लक्ष्य से, अपने मार्ग से विचलित हो जाते हैं। जरा-सा भी झटका आता है, जरा-सी भी कोई बात होती है, तो वे डिगने लग जाते हैं। कहते हैं कि हिमालय पर्वत को कोई डिगा नहीं सकता है। स्विटजरलैंड

में भी एक पर्वत है, जिसको हिमालय पर्वत की उपमा दी गई है, उस पर्वत को भी कोई डिगा नहीं सकता है। मैं स्विटजरलैंड गई और मन में सोचा कि लोग क्यों कहते होंगे, इन दोनों पर्वतों को कोई डिगा नहीं सकता। उस पर्वत पर मैं जब ऊपर पहुँची और मैंने दूरबीनों के द्वारा बाहर देखा, तो आँधी, तूफान और बर्फ उसमें पड़ी थी, लेकिन उस पर्वत को कोई डिगा नहीं सका। मतलब न जाने सदियों से उस पर बर्फ पड़ रही है, सदियों से उसमें आँधी- तूफान आते हैं, लेकिन हिमालय पर्वत की तरह एक ही जगह पर वह अजर-अमर होकर खड़ा है।

इसी तरह हमारे हिमालय को कहते हैं कि कोई शक्ति उसे हिला नहीं सकती। जैसे पतिव्रता नारी को कोई अन्य पुरुष डिगा नहीं सकता है, ऐसे ही उन पर्वतों को भी कोई हिला नहीं सकता, वे अपनी जगह अडिग हैं। इसी तरह भगवान के प्रति सच्चा प्रेम, श्रद्धा और विश्वास रखने वाले भक्त को भी कोई उसके मार्ग से विचलित नहीं कर सकता। जिस मनुष्य के अंदर सत्य के प्रति निष्ठा होती है और जो भगवान के नाम एवं स्वरूप

को जानना चाहता है, गुरु महाराज जी उसको भगवान का ज्ञान कराते हैं। देखो, दुनिया में जितने भी बड़े-बड़े मन्दिर बने हैं, उन सबमें भगवान की ही तो पूजा होती है। समय-समय पर महापुरुषों ने धरती पर आकर लोगों को भगवान का ज्ञान ही तो कराया। भगवान के कितने मन्दिर हैं, आप बताइये?

देश में जगह-जगह पर विशाल मन्दिर बने हुए हैं, जहां पर अनादिकाल से भगवान की पूजा होती आ रही है। उन मंदिरों में

आप लोगों को गुरु महाराज जी ने महात्माओं के द्वारा ज्ञान दिलाया है। वह ज्ञान, भगवान का सच्चा नाम तुम्हारे हृदय में है, फिर भी तुम दुःखी हो, क्योंकि तुमने नाम-सुमिरण में मन को नहीं लगाया। तुम्हारी वृत्तियाँ और तुम्हारा मन बाहर जा रहा है।

हमेशा देवी का जागरण होता रहता है। जैसे आजकल महादेवी का, मां दुर्गा का जगराता हो रहा है। उस दुर्गा माँ ने कब अवतार लिया होगा, पर भक्त लोगों की श्रद्धा बराबर चली आ रही है। उसका अवतार भक्तों की रक्षा और राक्षसों के संहार के लिए हुआ। जैसे कि समय-समय पर बारिश होने से फसल ठीक से पककर तैयार हो जाती है, फिर ट्यूबवेलों के द्वारा खेती को पानी देने की जरूरत ही नहीं पड़ती है। आकाश की बूँदों से फसल को ठीक पानी मिलता रहता है।

पानी की जरूरत कब पड़ती है, जब खेती सूखने लग जाती है। इसी तरह जब भयंकर राक्षस पैदा हो जाते हैं, तब माँ उनका नाश करने के लिए अवतार लेती है। वह दुष्टों का नाश करती है और भक्तों की रक्षा करती है। जो दुष्टजन होते हैं, उनका नाश हो जाता है और जो भक्त लोग होते हैं, उनकी रक्षा होती है। इसलिए शुभ कर्म करो, परमार्थ करो, सद्मार्ग पर चलो, भक्त और सेवक बनो इसी से कल्याण होगा।

इसी तरह से जब बालक के शरीर पर भयंकर फोड़ा बन जाता है, तो माँ अपने हृदय

पर पत्थर रखकर डॉक्टर के पास जाती है और कहती है कि मेरे बच्चे को यह भयंकर फोड़ा है, बालक सोता नहीं है, इसके अन्दर मवाद भर चुका है, डॉक्टर देखता है और उसमें चीरा देदेता है। उसका कितना प्रिय बेटा था और वह चीरा देदेता है। माता बेटे के हित के लिए बेटे के शरीर में जो फोड़ा बन चुका है, उसको साफ करने के लिए डॉक्टर से चीरा दिला देती है। इसी तरह से समय-समय पर महान् शक्तियाँ आती हैं। किसलिए? ज्ञान देने के लिए, मनुष्य को जगाने के लिए और उनका क्या मतलब? दूसरा उनका कोई मतलब नहीं होता। स्वार्थी लोग उनसे फायदा उठाना चाहते हैं। स्वार्थी लोगों में से कोई तो उनको राजनीति में ढालना चाहता है कि मेरा राजनैतिक उद्देश्य इनसे सिद्ध होगा और चुनाव में मुझको टिकट मिल जायेगा और कोई कहता है कि मेरी यह सिद्धि हो जायेगी, तो मैं उनको मानूँगा। मतलब अपनी-अपनी तरफ महापुरुषों की खींचातानी रहती है। बहुत से लोग कहते हैं कि महाराज जी, मैं यह काम करना चाहता हूँ, तो अच्छा भाई, करले, तेरी इच्छा। उनकी इच्छा नहीं है, पर उसकी इच्छा के मुताबिक उनको हाँ करनी पड़ती है। इसी तरह से महापुरुषों के बड़े-बड़े इतिहास भरे पड़े हैं। मनुष्यों ने महापुरुष को कभी-भी सुखी जीवन बिताने नहीं दिया। और आज उनकी मूर्ति को पूज-पूज करके उनको खुश कराना चाहते हैं, रिंझाना चाहते हैं। पर भाई, जब तो उनके अन्दर चेतन शक्ति थी, तब तो तुमने नुक्ताचीनी की। कोई राजनैतिक क्षेत्र में लाना चाहता था, तो कोई कहीं। तो महान् शक्तियाँ इस सबसे घृणा करके फिर अपने चोले को बदल देती हैं। क्यों वे चोला बदलते हैं कि मनुष्य फिर धोखा देने लग जाता है। भक्त धोखेबाज हो जाते हैं, जैसे बुद्ध भगवान का इतिहास तुमने देखा होगा। बुद्ध मजहब इतना बढ़ चुका था, इतना फैल चुका था, बहुत देशों में फैल चुका था और जब बहुत ज्यादा फैला,

तो वहाँ गन्दगी होने लगी। स्वार्थी लोग घुस गये उसमें, जो अपना स्वार्थ हल करना चाहते थे, इस तरह बुद्ध भगवान को इतना गन्दा भोजन कराया जिससे बुद्ध भगवान को खुद ग्लानि हुई, तो उस शरीर को छोड़ना पड़ा, बुद्ध के इतिहास को, उनकी जीवनी को देखो। राजा का बेटा हो करके भगवान हुआ। क्यों हुआ भगवान? क्या नहीं था उनके राज्य में? नारी थी, पुत्र था, सारा वैभव उसके घर में था। राजा तो भगवान का स्वरूप होता है। जो राजा होता है, उसको तो भगवान का स्वरूप बताया है। उसके घर में क्या कमी थी? केवल परमात्मा का नाम नहीं था। उस नाम की तलाश के लिए बुद्ध ने बड़े-बड़े तप किये। बड़ा-बड़ा भ्रमण किया कि कहाँ मुझे वह ज्ञान मिले। वास्तव में कहा है कि-

जाको जा पर सत्य सनेहौ।

सो तेहि मिले न कुछ संदेहौ॥

कहा जिसको जिस पर सत्य-स्नेह होता है और जिस उद्देश्य से वह निकलता है, वह पूरा होता है। वह उद्देश्य उनका पूरा हुआ। लेकिन इसी तरह से उसमें भी गन्दगी आई, तो उनको भी शरीर त्यागना पड़ा। इसलिए महापुरुष जो ज्ञान देते हैं, उनके ज्ञान से केवल सम्बन्ध रखना चाहिए। ज्ञान से तुम बहुत ऊँचे उठ सकते हो। गुरुनानकदेव जी कहते कि-

जिन मानुष से देवता कियो, करत न लागी बार।

गुरु महाराज की इतनी बड़ी महिमा है, इतनी बड़ी कृपा है कि उन्होंने मनुष्य से देवता बना दिया। देख लीजिये, ये साधु-संन्यासी हैं। वास्तव में ये नेम-धर्म से रहते हैं, ज्ञान का प्रचार करते हैं। गुरु महाराज जी ने प्रचार की आज्ञा दे रखी है इनको। आप देखिये, जहाँ वे ज्ञान देते हैं, जीवन-पर्यन्त इन्हीं की पूजा होती है। इन्हीं की ही आज्ञा में वे लोग चलते हैं। हमारी पूजा तो जब भी कभी हम जायेंगे, वहाँ तभी होती है। बाकी पूजा किसकी होती है, जो मनुष्य देवता के समान होते हैं, जैसे

देवताओं की पूजा बतलाई। जो आदमी अपने चरित्र से गिर जाते हैं, जो अपने ध्येय को नहीं समझते हैं, वास्तव में जो नहीं समझते कि महान् शक्ति ने, हम कैसे थे और हमें कैसा बना दिया कि वे लोग गिर ही जाते हैं।

आपलोग तो बहुत पुराने सत्संगी हो। बहुत दिनों से इस मिशन का सत्संग सुन रहे हो। इस मिशन का केवल एक ही उद्देश्य है, परमात्मा का नाम बताना। बाकी इस मिशन का दूसरा कोई भी उद्देश्य नहीं है। एक

लोग जीवन में भौतिक उन्नति तो बहुत कर लेते हैं, बड़े-बड़े बंगले बना लेते हैं, बड़ी-बड़ी डिग्री हासिल कर लेते हैं, पर जब ज्ञान मार्ग पर चलने की बात हो, तो जीरो-बटा जीरो। नारी हो या पुरुष हो, सब वहाँ के वहाँ हैं।

नहीं, मैं अपना हित चाहता हूँ, मैं किसी को मारना नहीं चाहता हूँ। मेरा परिवार है, यह नष्ट हो जायगा। मेरे पर कलंक लग जायेगा। मैं भीख माँग करके खा लूँगा, पर मैं इस राज्य को नहीं चाहता हूँ। शक्ति थी उसमें, पर मेरा व तेरा करके नर्वस हो गया कि मैं लड़ना नहीं चाहता हूँ। तब भगवान ने ज्ञान दिया, सत्संग सुनाया और कहा कि देख, मैं तेरे द्वारा सब कुछ करवा रहा हूँ। तू तो निमित्तमात्र है, मैं करवा रहा हूँ। ये दुष्ट वास्तव में अपना हित नहीं समझते हैं। ये दुष्ट मरने के लिए आये हुए हैं। ये दुष्ट पापों का साथ दे रहे हैं। जब ये मरना ही चाहते हैं, तब इनको मारना ही चाहिए। फिर किस तरह से भगवान ने ज्ञान दिया और फिर वही अर्जुन तैयार हो गया लड़ाई के लिए। इससे मेरा मतलब है कि इस भारत भूमि के इतिहास भरे पड़े हैं। ऐसे-ऐसे दानी हुए, हरिश्चन्द्र जैसे जिसने पुत्र को भी दक्षिणा में बेच दिया तथा अपने आपको भी बेच दिया। शमशान घाट पर सर्वस्व लुटा करके उस ऋण को चुकता करा रहा है। ऐसे दानी हुए इस भूमि में और आज इस भूमि की क्या दशा हो रही है, देख लीजिये। हाय-हाय हो रही है, हाय रोटी हाय क्या खायें। यह हो रहा है। घर में हाय-हाय हो रही है। न जाने इस हाय से क्या होगा? यह भी तुम समझते हो, जिस घर में सन्तोष नहीं होता है, जिस देश में सन्तोष नहीं होता है, और जिस अध्यात्म-मार्ग में सन्तोष नहीं होता है, तो वहाँ भी भयंकर विपदा आ सकती है। ऐसी बात नहीं कि वहाँ नहीं आ सकती। जिनका विश्वास हट जाता है, जिनको स्वार्थ आ जाता है, जो धोखेबाज बन जाते हैं, वहाँ भी भयंकर आफत आ जाती है। तो इस तरह से यह हाय-हाय क्या करेगी? समाप्त कर देगी एक दिन मनुष्य को। क्या करेगा मनुष्य? कहाँ से हथियार नहीं लाने पड़ेंगे, स्वयं शक्ति मनुष्य के अन्दर है और वही खा जायेगी मनुष्य को। इसलिए सन्तों की बातों को मानकर ध्यान-सुमिरण करना चाहिए, तभी आत्मा का उद्धार होगा।

संत न होते जगत में, तो जल मरता संसार

माताश्री मंगला जी

प्रे मी सज्जनों! यहां सत्संग पण्डाल में कुछ जिजासु लोग भी बैठे हुए हैं, उनको उपदेश नहीं है। वे सोचते होंगे कि वह प्रभु का कौन-सा नाम है, जिसके बारे में यहां सुनाया जा रहा है। संसार में जन्म लेने के बाद एक नाम तो हमारे माता-पिता ने दिया। लेकिन नौ महीने तक मां के गर्भ में हम जिस पावन नाम का सुमिरण करते हैं, वह नाम क्या है? भगवान राम और शिव ने जिस नाम का स्वयं सुमिरण किया, जिस नाम को जनाने के लिये हर युग में महापुरुष आते हैं और कहते हैं- हे मानव तुम उस नाम को जानो, उसे जानकर ही तुम्हारा कल्याण होगा।

आज का गृहस्थ जीवन चिंताओं से घिरा हुआ है। कई माताएं हमारे पास आती हैं, कहती हैं कि माता जी! हम तो थोड़ी देर ही भजन अभ्यास में बैठ पाती हैं और हमारा मन विचलित हो जाता है। हमें गृहस्थ की चिंताएं लगी रहती हैं। किसी को कमाने की चिंता है, किसी को पालन-पोषण की चिंता है, पर गृहस्थ में रहकर सेवा हम कर सकते हैं। हम जहां सेवा करेंगे, वहां स्वतः ही हमारा मन लगा रहेगा। गुरु दरबार के बारे में श्री माता जी कहते थे कि सेवा करने से कोई भी मेरा सेवक कंगाल नहीं हो सकता है, क्योंकि हम उस नाम की, सेवा की कमाई कर रहे हैं, जो हमारे साथ जाती है। संसार का खजाना, धन के भण्डार सब यहीं धरे रह जायेंगे। बड़ी-बड़ी बिल्डिंगें यहीं पर रह जायेंगी, बल्कि हमारे साथ सिर्फ सेवा की और नाम सुमिरण की कमाई ही जायेगी। जो चीज हमारे साथ



में जायेगी, हम उसी में ध्यान दें! नाम का सुमिरण करें; क्योंकि सांसारिक कामना तो कोई बड़ी बात नहीं। हर घर में धन हो सकता है, पर भाग्यशाली भक्त वही है जो सेवा में अपना समय लगाता है। इसीलिये गुरु दरबार में सेवा पर जोर दिया जाता है। यद्यपि भारत में अभी भी बहुत से क्षेत्र पिछड़े हुए हैं, वहां पर बहुत से लोग गरीब हैं, लेकिन यह भारत का बड़ा सौभाग्य है कि यहां पर गरीबी में रहकर भी लोगों ने आत्मज्ञान को प्राप्त कर लिया। अगर भगवान् आत्मज्ञान की कीमत लगाता तो करोड़ों व्यक्ति उससे वंचित रह जाते। केवल एक भगवान का नाम ही अमूल्य है, जिसका हम मूल्य नहीं चुका सकते। इस पण्डाल में गरीब-अमीर हर तरह का व्यक्ति बैठा है, जो एक दिन में सिर्फ सौ रुपये कमाता है और उस प्रकार का व्यक्ति भी यहां है, जो रोज हजारों रुपये कमाता होगा; लेकिन इस

पण्डाल के नीचे सभी एक साथ बैठकर सत्संग का आनन्द ले रहे हैं। इसलिये गुरु महाराज जी की सेवा में हम अपना मन लगायें और सेवा से अपने जीवन को धन्य बनायें! भजन सुमिरण करें; क्योंकि अगर भजन नहीं किया, तो मनुष्य का संसार में जीना व्यर्थ है। इसीलिये समय-समय पर सच्चे सन्त आत्मज्ञान देने आते हैं। संत कबीरदास जी कहते हैं-

**कबीर खड़ा बाजार में,
मांगे सबकी खैर।
ना काहू से दोस्ती,
ना काहू से वैर॥**

यहां गुरु महाराज के सामने जो सन्त-महात्मा बैठे हैं, ये जिस बात का जिक्र करते हैं, जिस ज्ञान के बारे में समझाते हैं, इनकी बातों को हमें मानना चाहिये। इनकी बात को मानने में भक्त का कल्याण है। गुरु महाराज जी की कृपा से जो आत्मा का ज्ञान होता है,

उसको समझकर भजन करना चाहिए। चम्पा का एक फूल होता है जिसमें कई गुण होते हैं; लेकिन वह भौंरे को अपने पास नहीं आने देता, क्योंकि भौंरा एक जगह स्थिर नहीं होता, वह जगह-जगह भटकता रहता है। संत कहते हैं-

**चम्पा तुझमें तीन गुण,
रूप रंग और वास।
अवगुण तुझमें कौन सा,
जो भौंरा न आवे पास॥**

चम्पा कहती है-

**महात्मा जी मुझमें तीन गुण,
रूप, रंग और वास।
जगह-जगह के मीत को,
कौन बिठाये पास॥**

भौंरे की तरह अगर मन को हम इसी तरह चलायमान रखेंगे, तो हमारे ऊपर गुरु महाराज जी की कृपा नहीं होगी। इसलिये जब हम ज्ञानी बन चुके हैं, तो हमें भजन जरूर करना चाहिये।

आज भी कई सौ लोगों को आत्मज्ञान का क्रियात्मक बोध हुआ। असल में आज ही उनका वास्तविक जन्म हुआ, क्योंकि पहले जन्म तो उनका माता के गर्भ से हुआ। नामकरण हो गया होगा, पर आज उनका असली जन्म हुआ, आज उनका जन्म सफल हो गया। जो बाहरी कर्मकाण्ड में लगे रहते हैं, उन्हें भक्ति में सफलता नहीं मिलती। संत कहते हैं कि अपने चंचल मन को स्थिर करो और इसे भक्ति मार्ग में लगाओ। संसार छोड़ने के बाद केवल भक्ति और सेवा की कमाई ही हमारे साथ जानी है, इसलिए उसी में अपना मन लगाओ।

जब भगवान श्रीकृष्ण का अवतरण हुआ, तो भगवान शिव उनके दर्शनों के लिए अपने ही भेष में गये, पर माता

यशोदा उनको श्रीकृष्ण के पास जाने नहीं देती हैं। कहती हैं- सर्पों की माला से मेरा लाल डर जायेगा। तू जोगी है, तेरे शरीर से सर्प लिपटे हैं, तेरे को देखकर मेरा बालक डर जायेगा। भगवान शिव कहते हैं कि नहीं माता, तू मुझे जाने दे। त्रेतायुग में जब भगवान राम का विवाह हो रहा था, तो भगवान शिव भेष बदलकर भगवान का विवाह देखने के

**संत न होते जगत में,
तो जल मरता संसार॥**

जो बातें हमारे संत-महापुरुषों ने कही हैं, आज वे सब देखने को मिल रही हैं। ऐसे भयंकर कलिकाल के समय में सब लोगों को भगवान का भजन-सुमिरन करना चाहिए। हम रोज आरती के बाद कहते हैं कि-

**त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।**

तुम ही माता-पिता हो, तुम ही मेरे बंधु-सखा हो। हम लोग इस प्रार्थना से अपने दिन की शुरुआत करते हैं; क्योंकि वही परमपिता परमात्मा सच्चे रक्षक है। आज इस समाज में जो रक्षक कहलाते हैं, वे ही भक्षक बन गये हैं; तो हमारी रक्षा कौन करेगा? देखो! आज सारे विश्व में शिव जी के मंदिर पर सब लोग जल चढ़ायेंगे और भीड़ में कितनी बेचारी माताओं की जंजीरें लुट जायेंगी, कितने बेचारे धक्का-मुक्की और कुचलने से घर ही वापस नहीं आयेंगे। सचमुच भगवान की आराधना तो सबसे पहले हमें अपने हृदय में करनी चाहिए। भगवान भी यही कहते हैं कि जो मेरा सच्चे हृदय से निरन्तर सुमिरन करता है, वही भक्त मुझे परमप्रिय है। दिन-रात में हम इक्कीस हजार छः सौ बार स्वांसों को लेते हैं। हम जानते ही नहीं हैं कि उन स्वांसों की कीमत क्या है? हमें यह पता ही नहीं कि हम अपने मन को कहां पर लगायें?

कलिकाल में कितना खराब समय चल रहा है। कलिकाल में भी संत-महापुरुषों की कृपा हम सबके ऊपर है, लेकिन ऐसे भयंकर समय में हम लोग अगर भगवान के सच्चे नाम का सुमिरन नहीं करेंगे, भगवान की याद नहीं करेंगे, तो हमें विनाश से बचाने वाला कोई नहीं है। मां भी अपने बेटे को नहीं बचा सकती है। आज पति अपनी पत्नी को नहीं बचा पा रहा है। केवल भगवान ही है, जो सबके प्राणों का पति है, अपने भक्त को विनाश से बचा सकता है। इसीलिए कहा-

**आग लगी आकाश में,
झड़-झड़ पड़े अंगार।**

भगवान श्रीकृष्ण गीता में कहते हैं कि हे अर्जुन! दसों इन्द्रियों से तू युद्ध कर और ग्यारहवें मन से तू मेरा सुमिरन कर। सभी महापुरुषों ने मन को भजन-सुमिरन की तरफ लगाने को कहा है। इसलिए मन को प्रभु सुमिरन में लगायें।

SPIRITUAL KNOWLEDGE CANNOT BE ATTAINED WITHOUT A PERFECT MASTER

SHRI HANS JI MAHARAJ

Dear Premies, Only a perfect living master can reveal the perfect name of 'God', help us realize that primordial vibration which stills the mind and is the source of utmost peace and bliss. Saint Kabirdas ji has described the Word in the following verse:

*"Shabd bina surati
aandhari, kaho kahan ko jaye
Dwar na pave shabd ka,
phir-phir bhatka khaye
Koti naam sansaar mein,
tate mukti na hoye
Aadi naam jo gupt jap,
bujhe birla koi"*

The Surati is blind without being anchored to the Word, where else can it go? Unable to find the door to the 'Word', one keeps revolving in the cycle of life and death. God is called by a multitude of names in this world, but none that help attain salvation. Only a handful know the 'Primordial Name' which is remembered secretly within.

The 'Primordial Name' mentioned by Kabirdas ji cannot be revealed by saints or masters of previous centuries, neither can it be explained through the written or spoken words; Guru Nanakdev ji also said:

*"Eko simaro nanaka, jal
thal rahyo samaya"*

Remember that one True

Name which pervades all the water, earth, all life. This 'Holy Name' can only be realized through the grace of a living Perfect Master.

The root of life, the 'Primordial Vibration' cannot be destroyed in any age, and the knowledge of this Holy Name exists in this age too. Lord Ram, and Lord Krishna became disciples of their Gurus during their time. Similarly, you too can benefit from living Perfect Masters. You must also think about the fact that upon dying this body will perish, however the 'aatma' or the soul is eternal. It cannot be destroyed. It either adopts a new body, or it becomes one with the supreme divine.

All incarnations, great saints and 'True-Masters' that have lived became one with God due to attainment of 'Self-Realization'. God rests in our hearts, and thus the Perfect Master who is God in



human form rests within our hearts too. A Spiritual Master that imparts the wisdom of Spiritual knowledge and helps us realize the 'One' that permeates all life, is bound to have the Divine knowledge of past incarnations, and great spiritual masters. Won't the essence of Saint Kabirdas ji's soul rest within such a Divine Master? We must think about this deeply. We too need to attain the Spiritual Knowledge possessed by the Masters.

People often say that first one must eliminate lust, anger, greed, and attachment. Only then can Spiritual knowledge be attained. People keep

talking of removing ignorance, all the while being in the dark themselves. There is no such thing as ignorance. For instance, I wasn't present at this venue before. If there was an attendance register, I would have been marked absent. But now that I am present here, what has happened to my absence? People would remark that my absence has vanished, or destroyed, or no longer exists. However, absence is not an entity in itself. It only exists when I am not present. My presence has a form, my absence does not. Similarly, the absence of knowledge is ignorance. The absence of sunlight is darkness. Darkness is not an entity. That is why, in order to dispel ignorance, knowledge is essential, just as light is to eliminate darkness. However, one cannot attain 'Spiritual Knowledge' without a Spiritual Master.

*"Bin guru hoi ki gyan,
gyan ki hoi virag bin"*

*Gawahin ved-puran, sukh
ki lahahin hari bhagati bin"*

In our holy texts and scriptures, it is said that no one can attain the knowledge of God without a Spiritual Master; and there can be no devotion without knowledge and no liberation without devotion. Our scriptures are filled with the glory of the

Spiritual teacher because it is the Guru who helps us realize the Primordial Word, and the Divine Light which are beyond the grasp of the five senses, the mind and intellect of man. Saint Tulsidas ji said-

*"Shri guru pad nakh mani
gan jyoti."*

*Sumirat divya drishti hiya
hoti."*

*By meditating upon the
Spiritual Master's form,
divine sight is realized.*

*"Karandhaar satguru drid
nava*

*Durlabh saaj sulabh kari
pava"*

In the Ramcharitmanas, Lord Ram himself remarks on the greatness of the Perfect Master (Satguru). The human body is the boat that can help us cross this ocean of life and death, and the Spiritual Master steers our boat through the trials of this worldly ocean. It is the Master that helps us harness our boat to achieve the rare and difficult chance of realizing God.

We have received this human body to liberate ourselves from the cycle of life and death. We have God's blessing through this human form, but are we utilizing the benefit of this blessing? Not at all. When will we benefit from the Lord's blessing?

*"Ram kripa nasahin sab
roga, Jo ehin bhanti bane"*

sanyoga

*Satguru vaid vachan
vishwasa, sanyam yeh na
vishay kar asha"*

What is the purpose of human life? Devotion to God is like the life giving sanjeevani herb, that eliminates all suffering, and that devotion comes from adopting the teachings of a Perfect Master. Resolute faith in the Satguru's teachings is the only way to attain devotion that can lead to salvation. All other solutions are of no avail. God's devotion has been described as the 'Divine Light' –

*"Ram bhakti chintamani
sundar. Basahin garud jake
ur andar.*

*Param prakash roop din
rati. Nahin chahiye kachhu
diya ghrit batí"*

Devotion to the Lord is like a shining jewel, and the heart in which it rests experiences the Supreme Divine Light which shines day and night, and needs no external lamp, wick or oil to be lit.

In the Geeta, Lord Krishna tells Arjun to cast aside all other rituals and religious practices and seek only his shelter. In doing so, he would be free him from all sin. Only devotion to God is true religion. People do not understand this. Only through devotion can one attain salvation.

गंगा दशहरा है अध्यात्म और प्रकृति का संगम

सनातन संस्कृति का एक पुरातन पर्व है गंगा दशहरा, जो हमारे देश में बड़ी आस्था और श्रद्धा सहित मनाया जाता है। यह माँ गंगा के पृथ्वी पर अवतरण का पावन पर्व है, जो भारतीय संस्कृति की चिंतन परंपरा में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह केवल एक वार्षिक धार्मिक अनुष्ठान या पौराणिक कथा का स्मरणोत्सव मात्र नहीं है, बल्कि यह अपने गर्भ में विज्ञान के अनेक गूढ़ सत्यों, पर्यावरण की गंभीर चुनौतियों और गहन अध्यात्म की शिक्षाओं को समेटे हुए एक बहुआयामी उत्सव है। पौराणिक कथाओं के अनुसार राजा भगीरथ की अलौकिक कठोर तपस्या के फलस्वरूप देवाधिदेव महादेव की अनुकंपा से उनकी जटाओं से होकर गंगा के स्वर्ग से धरती पर आने की दिव्य कथा, हमें जीवन और प्रकृति को विज्ञान, पर्यावरण और अध्यात्म—इन तीनों ही दृष्टिकोणों से समग्र रूप में देखने और समझने को प्रेरित करती है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से जल के जीवनदायी और शुद्धिकारक गुण विज्ञान की दृष्टि से देखें तो जल ही जीवन का आधार है, इसके बिना पृथ्वी पर जीवन की कल्पना भी असंभव है।

गंगा का अवतरण, सार रूपमें, पृथ्वी पर जीवन के पोषण और संवर्धन के लिए स्वच्छ जल की अपरिहार्य महत्ता को दर्शाता है। जल में प्राकृतिक रूप से शुद्ध करने की अद्भुत क्षमता होती है। इसमें अनेक पदार्थों को घुला लेने की क्षमता होती है, इस वजह से जल गंदगी को अपने में घुलाकर बहा ले जाता है और उसे पतला करके उसके कुप्रभाव को कम करता है। यह नदियों के स्वतः शुद्धिकरण की प्रक्रिया का आधार है। प्राचीन काल से ही गंगा नदी के जल की विशिष्ट शुद्धिकारक क्षमताओं और लंबे समय तक खराब न होने की बात होती रही है। इसके पीछे संभवतः हिमालय में औषधीय गुणों से युक्त जड़ी-बूटियों वाले क्षेत्रों से होकर बहना, विशिष्ट खनिजों की उपस्थिति या पानी में पाए जाने वाले विशेष बैक्टीरियोफेज (जीवाणुभोजी वायरस जो हानिकारक बैक्टीरिया को नष्ट करते हैं) हो सकते हैं, जिन पर आज भी शोध जारी है। भगीरथ का प्रयास प्रतीकात्मक रूप से मानवता के लिए इस जीवनदायी और शुद्धिकारक तत्व को सुलभ बनाने का एक महान उद्यम था। गंगा दशहरा हमें जल के इस वैज्ञानिक महत्व,

इसके जीवन-रक्षक गुणों और इसकी शुद्धिकरण क्षमता का स्मरण कराता है, साथ ही यह भी सोचने पर विवश करता है कि क्या हमने इस अमूल्य वैज्ञानिक वरदान का सम्मान किया है? पर्यावरणीय दृष्टिकोण से प्रकृति का सम्मान और नदियों का संरक्षण हर जागरूक मनुष्य का कर्तव्य है। गंगा के अवतरण का



गंगा दशहरा
5 जून पर विशेष

यह पर्व हमें सीधे तौर पर पर्यावरण और प्रकृति के सम्मान के नाजुक संतुलन से जोड़ता है। गंगा केवल एक जलधारा नहीं, बल्कि अपने उद्भव गंगोत्री से लेकर सागर में पहुंचने तक एक सम्पूर्ण नैसर्गिक शक्ति से युक्त एक अनूठी क्षमता से युक्त नदी है, ऐसी क्षमता अन्य किसी भी नदी में नहीं है। अपनी इस अनूठी क्षमता से युक्त यह नदी सदियों से अपने किनारों पर बसी सभ्यताओं, असंख्य जीव-जंतुओं और वनस्पतियों का पोषण करती आ रही है।

राजा भगीरथ की कथा हमें यह संदेश देती है कि प्राकृतिक संसाधनों, विशेषकर नदियों का कितना महत्व है और यही वजह

है कि इसे सम्मान दिया जाना चाहिए; क्योंकि वे ही जीवन का आधार हैं। लेकिन आजकल गंगा की स्थिति बड़ी चिंताजनक हो गई है। हमारी नदियाँ, और स्वयं गंगा भी, औद्योगिक कचरे, अनुपचारित सीवेज, कृषि रसायनों के बहाव और प्लास्टिक जैसे घातक प्रदूषण के गंभीर संकट से जूझ रही हैं। गंगा दशहरा इस विषम परिस्थिति पर ध्यान देने के लिए प्राचीन मनीषियों द्वारा बनाया गया एक सुअवसर है। जब सभी लोगों को अपने नैसर्गिक जलस्रोतों, नदी-पहाड़ आदि के प्रति सम्मान दर्शनी के लिए जागरूक किया जा सके। इसी को ध्यान में रखकर उन्हें देवी-देवता का स्वरूप मानने की परंपरा और पर्व बनाया गया है। लेकिन अति आधुनिकतावादी सोच के हावी होने का परिणाम यह हुआ है कि एक ओर हम गंगा को माँ और पूजनीय मानते हैं, दूसरी ओर उसे निरंतर प्रदूषित कर रहे हैं। यदि हम नदियों को इसी प्रकार प्रदूषित करते रहे, तो हम न केवल उनके वैज्ञानिक शुद्धिकारक गुणों को नष्ट करते रहेंगे, बल्कि उसकी जीवनदायिनी शक्ति का भी अपमान करेंगे, जिसका गंगा प्रतीक है, तो क्या होगा? इसका प्रभाव केवल नदी के पानी की गुणवत्ता तक सीमित नहीं रहता, यह भूजल को दूषित करता है, जैव विविधता को नष्ट करता है, और अंततः मानव स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा पैदा करता है। गंगा का ‘पतित-पावनी’ स्वरूप बनाए रखने के लिए उसका संरक्षण और स्वच्छता केवल सरकार की नहीं, बल्कि हमारी सामूहिक और व्यक्तिगत जिम्मेदारी है। हमें कचरा कम करने, जल का विवेकपूर्ण उपयोग करने, सफाई अभियानों में सहयोग देने और नदियों के संरक्षण के लिए नीतियों का समर्थन करने, जैसे ठोस कदम उठाने होंगे।

प्रकृति के प्रति संवेदनशील होना और नदियों का सम्मान करना ही सच्ची पूजा है। यह पर्व हमें प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व और सामंजस्य स्थापित करने का आह्वान करता है। आध्यात्मिक दृष्टिकोण से अंतर्मन की शुद्धि और चेतना का प्रवाह गंगा दशहरा का सबसे गहरा, मार्मिक और परिवर्तनकारी पक्ष है। गंगा का धरती पर आना केवल बाहरी जगत की प्यास बुझाने या भौतिक शुद्धि का प्रतीक नहीं है, बल्कि यह आत्मा की प्यास और आंतरिक मैल— अहंकार, क्रोध, लोभ, मोह, वासना आदि के प्रक्षालन का भी गहन संकेत है। जैसे गंगा पहाड़ों से निकलकर, चट्टानों से टकराकर, मैदानों में फैलकर, निरंतर बहती हुई अंततः अपने मूल स्रोत, सागर में विलीन हो जाती है, वैसे ही हमारी चेतना भी जन्म-मृत्यु के चक्र, सांसारिक बाधाओं और द्वंद्वों को पार करती हुई अपने परम स्रोत, उस विराट सत्य परमात्मा में विलीन होने को आतुर रहती है।

संत कबीर जैसे आत्मज्ञानी संत ने हमें बार-बार चेताया है कि सच्ची शुद्धि बाहरी स्नान या कर्मकांडों से अधिक मन की निर्मलता में है। कहा है-

**नहाये धोये क्या हुआ, जो मन मैल न जाय।
मीन सदा जल में रहे, धोये बास न जाय॥**

यह आंतरिक मैल ही हमारे दुःखों का कारण है, यह हमारी दृष्टि को धुंधला करता है और हमें अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानने से रोकता है। गंगा का अविरल प्रवाह जीवन की निरंतरता, परिवर्तन की अनिवार्यता और वैराग्य का भी प्रतीक है। यह हमें सिखाता है कि जीवन में सुख-दुःख, सफलता-असफलता आते-जाते रहते हैं, हमें नदी की तरह बिना रुके, बिना आसक्त हुए, समझाव से आगे बढ़ते रहना चाहिए। राजा भगीरथ का कई पीढ़ियों से अनवरत चलने वाला प्रयास हमें अपने आध्यात्मिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए आवश्यक दृढ़ संकल्प, अटूट विश्वास और समर्पण सहित पुरुषार्थ की प्रेरणा देता है। यह दर्शाता है कि सच्ची लगन से असंभव भी संभव हो सकता है। गंगा में डुबकी लगाना केवल पाप धोने का कर्मकांड नहीं, बल्कि अपनी चेतना को उस विराट सत्ता में विलीन करने का, अपने अहंकार को गलाने का और अपने भीतर स्थित उस पवित्र अंतस की गंगा को अनुभव करने का एक आध्यात्मिक अभ्यास है। यह अंतस की गंगा, ज्ञान, करुणा और प्रेम की धारा है, जिसे हमें ध्यान, स्वाध्याय, साधना और सेवा के माध्यम से निरंतर प्रवाहमान रखना है। त्रिवेणी का संगम और जीवन में उसका प्रवाह इस प्रकार, गंगा दशहरा मात्र एक दिन का पर्व न होकर, विज्ञान, पर्यावरण और अध्यात्म के पवित्र त्रिवेणी संगम का सतत अनुस्मारक है। यह हमें जल के वैज्ञानिक महत्व को समझने और उसका सम्मान करने, प्रकृति और अपनी जीवनदायिनी नदियों का संरक्षण करने तथा अपनी आंतरिक शुद्धि और चेतना के निरंतर प्रवाह को बनाए रखने के लिए गहराई से प्रेरित करता है। यह पर्व हमें स्पष्ट रूप से याद दिलाता है कि बाहरी स्वच्छता और आंतरिक निर्मलता, प्रकृति का सम्मान और आध्यात्मिक उन्नति, ये सभी एक-दूसरे से अविभाज्य रूप से जुड़े हुए हैं। जब हम इन तीनों पहलुओं के अंतर्संबंध को समझते हुए, केवल कर्मकांड तक सीमित न रहकर, बल्कि अपने विचारों, कर्मों और जीवनशैली में गंगा की निर्मलता, प्रवाह और समर्पण के भाव को उतारते हुए गंगा दशहरा मनाते हैं, तभी हम इसके वास्तविक, गहरे और रूपांतरणकारी मर्म को आत्मसात कर पाते हैं और अपने जीवन को सही अर्थों में धन्य बना सकते हैं। ■

जगन्नाथ रथ यात्रा

भक्ति से परिपूर्ण सांस्कृतिक महोत्सव

भा रत्वर्षकी भूमिपर जब-जब धर्म, संस्कृति और भक्ति की बात होती है, तब-तब उड़ीसा के पुरी नगर में आयोजित जगन्नाथ रथ यात्रा का भव्य और अलौकिक आयोजन स्मृति में उभर आता है। यह केवल एक धार्मिक उत्सव नहीं, बल्कि आध्यात्मिक जागरण, सामाजिक समरसता और सनातन भक्ति परंपरा का जीता-जागता उदाहरण है। यह यात्रा हर वर्ष आषाढ़ शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि को प्रारंभ होती है और भगवान श्रीजगन्नाथ, उनके बड़े भ्राता बलभद्र तथा बहन सुभद्रा के साथ गुंडिचा मंदिर की ओर प्रस्थान करते हैं। यह यात्रा केवल रथों की नहीं, भावों की यात्रा होती है- जो आत्मा को परमात्मा से जोड़ने की कला सिखाती है। इस सांस्कृतिक महोत्सव से जुड़ी एक पौराणिक कथा है जो रथ यात्रा की उत्पत्ति को इंगित करती है।

हमारे प्राचीन शास्त्रों में वर्णित है कि भगवान श्रीकृष्ण की लीला के अवसान के पश्चात उनका शरीर अदृश्य हो गया, किन्तु हृदय पंचतत्व में विलीन नहीं हुआ। उस ‘नीलमाधव’ रूप को ही बाद में जगन्नाथ कहा गया। कहते हैं कि स्वर्ज में प्रेरणा प्राप्त कर मालवा नरेश इन्द्रध्युम्न ने समुद्र तट पर एक दिव्य मंदिर बनवाया और भगवान के विग्रह की स्थापना की। भगवान ने शिल्पकार विश्वकर्मा को भेजा, जिन्होंने कुछ शर्तों पर देव विग्रह गढ़ने का कार्य आरंभ किया, परंतु अधीरता के कारण विग्रह अधूरे रह गए। उन्हीं अधूरे विग्रहों को ही आज तक ‘जगन्नाथ’, ‘बलभद्र’ और ‘सुभद्रा’ के रूप में पूजा जाता है। रथ यात्रा की परंपरा के पीछे मान्यता है कि भगवान श्रीकृष्ण, जब द्वारका में थे, तब एक बार उनकी माता यशोदा ने आग्रह किया कि वे अपने भाई-बहन के साथ वृद्धावन भ्रमण करें। उसी भावना को रूप देकर भगवान हर वर्ष पुरी से गुंडिचा मंदिर तक जाते हैं, जो उनकी

वास्तविक लीलाधाम वृद्धावन का प्रतीक है। जगन्नाथ रथ यात्रा भारतीय समाज की सामूहिक चेतना, समानता और समर्पण का अनुपम उदाहरण है। यह एकमात्र ऐसा पर्व है जिसमें भगवान स्वयं भक्तों के पास आते हैं। उन्हें



रथ पर विराजमान कर नगर भ्रमण कराया जाता है। इस यात्रा में राजा से लेकर रंक तक, ब्राह्मण से लेकर शूद्र तक, सभी को एक समान भागीदारी का अवसर मिलता है। यहां कोई जाति, कोई वर्ग भेद नहीं चलता। ‘छुआछूत’ जैसी सामाजिक कुरीतियां यहां पूर्णतः निषिद्ध हैं। पुरी के गजपति राजा स्वयं भगवान के रथ की सफाई ‘सोने की झाड़ू’ से करते हैं, यह दृश्य स्वयं में यह संदेश देता

है कि सेवा में कोई छोटा-बड़ा नहीं होता। यही सनातन धर्म की मूल आत्मा है- सेवा, समर्पण और समानता। जगन्नाथ रथ यात्रा केवल एक बाह्य उत्सव नहीं, बल्कि भीतर की यात्रा का प्रतीक है। रथ यात्रा हमें यह स्मरण कराती है कि हमारा जीवन भी एक यात्रा है, जिसमें आत्मा को शरीर-रथ में बैठाकर परमात्मा की ओर ले जाना है। रथ खींचते समय जो भाव उत्पन्न होता है, वह केवल बाहरी प्रयास नहीं होता- वह मन की गांठों को खोलने, अहंकार को छोड़ने और प्रभु से जुड़ने का माध्यम बन जाता है।

को खींचना है। यह रथ केवल लकड़ी का नहीं, यह एक सभ्यता का, संस्कृति का और आत्मा की चेतना का रथ है। इस यात्रा का मूल तत्व यही है कि प्रभु सबके हैं, और सब प्रभु के हैं। न कोई ऊँचा, न कोई नीचा। जब रथ सबके बल से चलता है, तभी वह अपने गंतव्य तक पहुँचता है- ठीक वैसे ही, जब समाज के सभी वर्ग मिलकर आगे बढ़ते हैं, तब ही राष्ट्र और मानवता की प्रगति होती है। इतना ही नहीं, यह यात्रा भक्ति रस और सेवा भाव की संजीवनी का प्रतीक है। जगन्नाथ रथ यात्रा भक्ति रस की



प्रभु की भक्ति में जो आत्मबोध होता है, वही जीवन की दिशा बदल सकता है।

वर्तमान युग की भौतिक सोच वाली मानसिकता, स्पर्धा और स्वार्थ के बीच यह रथ यात्रा त्याग, प्रेम और भक्ति की मूल भावना की पुनःस्थापना करती है। यह हमें बताती है कि सच्चा धर्म वही है जो मन को पवित्र करे, व्यवहार को विनम्र बनाए और सबको एक समान दृष्टि से देखे। वर्तमान युग में जगन्नाथ रथ यात्रा का व्यावहारिक संदेश भी पूरी मानवता के लिए प्रासंगिक है। आज जब समाज विभाजित होता जा रहा है- जाति, वर्ग, भाषा और विचारों के आधार पर, तब जगन्नाथ रथ यात्रा हमें सिखाती है कि हम सब एक ही राह के पथिक हैं। हमें एक-दूसरे को खींचना नहीं, बल्कि मिलकर भगवान् जगन्नाथ के रथ

वर्षा है। यह हमें सिखाती है कि जीवन में ईश्वर के प्रति श्रद्धा, समाज के प्रति सेवा और आत्मा के प्रति जागरूकता होना ही सच्चा धर्म है। यह यात्रा सनातनियों को यह बोध कराती है कि धर्म केवल पूजा तक सीमित नहीं- धर्म है सेवा, प्रेम और सभी में भगवान का दर्शन करना। आज आवश्यकता है कि हम इस यात्रा के संदेश को केवल उत्सव तक न रखें, बल्कि उसे अपने जीवन का हिस्सा बनाएं। न भेद करें, न द्वेष करें बल्कि सबको साथ लेकर चलें, यही प्रभु की इच्छा है। यही रथ यात्रा की आत्मा है। यही सनातन का सार है। सबके साथ प्रेम से रहना और प्रभु की भक्ति में संलग्न रहना और अपने अंदर स्थित प्रभु को ही सबके हृदय में विराजमान देखना ही मानव तन की सार्थकता है। ■

दास कबीर जतन से ओढ़ी, ज्यों की त्यों धरि दीनी चदरिया

सं

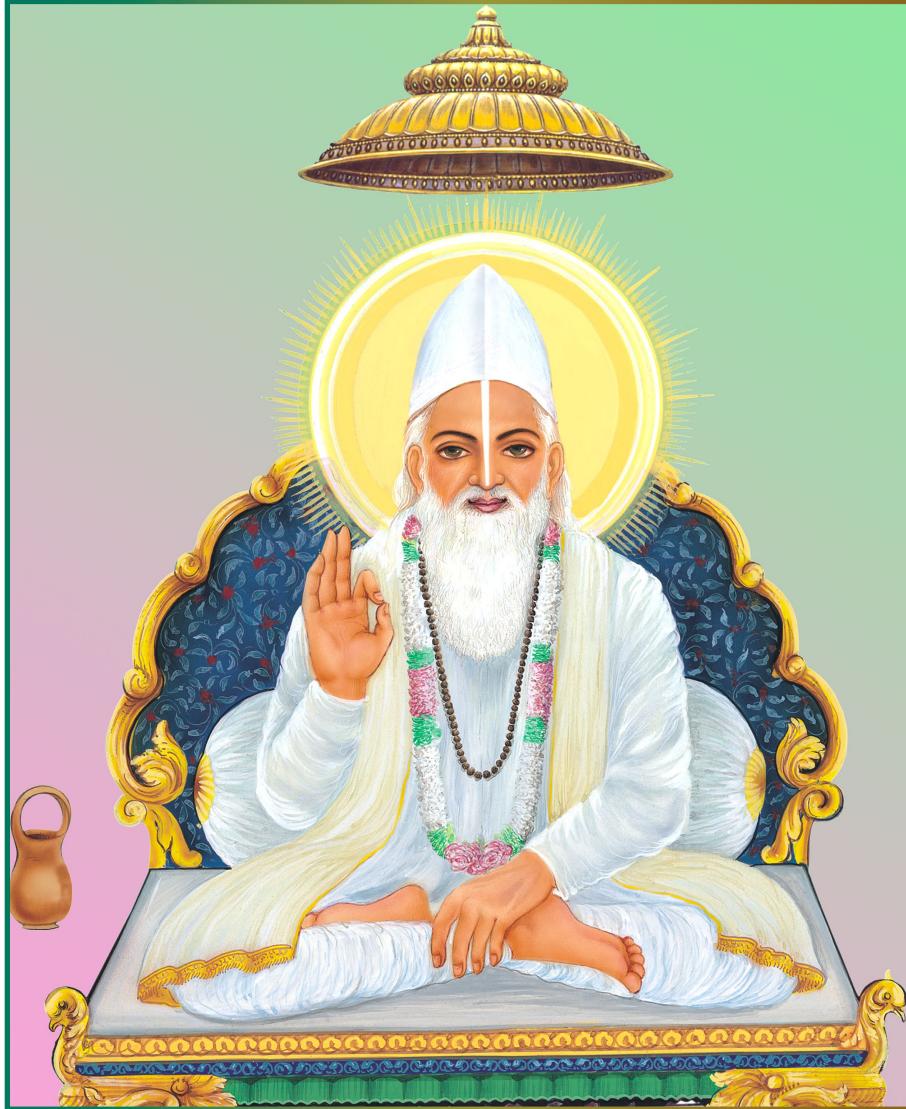
तकबीरदास, भक्ति और ज्ञान की अद्वितीय धारा के अपनी अप्रतिम साधना, तप और आंतरिक शुद्धता के बल पर मानव की पवित्र चादर को बड़े जतन से संभाल कर उपयोग में लाये और जीवन के अंत में उसे बिना धूमिल किए, वैसी की वैसी परमात्मा को लौटा दी। उनका संपूर्ण जीवन एक अनुपम साधना का उदाहरण है। उनकी यह अमूल्य वाणी है जिसे बड़े विश्वास के साथ उन्होंने घोषित किया- “दास कबीर जतन से ओढ़ी, ज्यों की त्यों धरि दीनी चदरिया।” यह घोषणा उनके पद की केवल एक पंक्ति नहीं, बल्कि उनके तपस्वी जीवन के दृढ़ संकल्प भरी वाणी का उद्घोष है। कबीर दास जी के अनुसार यह अनुपम चादर मनुष्य का शरीर है, जो परमात्मा की दी हुई धरोहर है। इसे यथासंभव निर्मल और पवित्र बनाए रखना साधक का कर्तव्य है। कबीरदास ने न केवल उपदेश दिए, बल्कि स्वयं अपने आचरण से भी यह सिद्ध कर दिखाया। उनके जीवन की साधना मात्र बाहरी क्रियाओं तक सीमित नहीं थी। उन्होंने अपने मन के भीतर की आसक्तियों काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार आदि का नाश कर, आत्मा को पूर्णतः निर्मल कर लिया था। उनकी एक प्रसिद्ध साखी है-

कबीरा भीतर जो करे, बाहर करै न कोय।

जो बाहर भीतर एक सा, सो साधु जानो सोय।

संत कबीरदास जी ने अपनी आत्मिक साधना को कभी दिखावा नहीं बनाया। वे कहते हैं कि भीतर और बाहर के आचरण की एकरूपता ही मनुष्य

को सच्चा साधक बनाती है। उनका संपूर्ण जीवन



कबीर जयंती 11 जून पर विशेष

इसी सत्य का उदाहरण है। वे गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी विरक्ति और समर्पण का आदर्श बने रहे। उनकी साधना का मूल भाव था- प्रभु के सत्य-नाम का स्मरण और अपनी आत्मा का अनुसंधान। वे यह भी कहते हैं-

साई इतना दीजिए, जामे कुटुम्ब समाय।

मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय।

संत कबीर के लिए साधना कोई बाहरी दिखावा नहीं

होती। उनके लिए साधना का अर्थ था- संतोष, सेवा और सत्य का आचरण। उन्होंने अपने अनुयायियों को गुरु की आज्ञा में बंध कर आजीवन गुरु की सेवा और उनके बताए मार्ग पर चलने का अनवरत अभ्यास करना है। उनका स्पष्ट आदेश है कि गुरु का स्थान गोविंद से भी बड़ा है। क्योंकि गुरु की अनुकंपा से ही गोविंद का परिचय मिलता है। उनका एक प्रसिद्ध दोहा है-

**गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पांय।
बलिहारी गुरु आपने, जिन गोविंद दियो बताय॥**

इसलिए शिष्य का कर्तव्य होता है कि गुरु की आज्ञा का पालन करे। यथा-

**गुरु की आज्ञा आवै, गुरु की आज्ञा जाय।
कहे कबीर ता दास को, तीन लोक डर नाय॥**

उनकी वाणी का सार यही है कि जो भी व्यक्ति अपना मानव तन सार्थक करना चाहता है, उसे आध्यात्मिकता की राह पर ही अग्रसर होना चाहिए। कबीरदास ने जीवनभर सामाजिक पाखंडों, जातिवाद और धार्मिक आडंबरों का विरोध किया। उनका आध्यात्मिक संदेश अत्यंत सरल लेकिन अत्यधिक गहन था। यथा-

**माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर।
कर का मणका डारि के, मन का मणका फेर।**

इस वाणी में संत कबीरदास जी स्पष्ट करते हैं कि बाहरी जप-तप से नहीं, बल्कि अंतर्मन के शुद्ध परिवर्तन से ही मुक्ति संभव है। आज के भौतिकतावादी युग में जब मनुष्य बाह्य आडंबरों में उलझा हुआ है, कबीर की वाणी हमें भीतर की साधना का स्मरण कराती है। वे कहते हैं-

**पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।**

कबीरदास जी प्रेम को ही सच्चा धर्म मानते हैं- ऐसा प्रेम जो स्वार्थरहित और अटूट हो। आधुनिक युग में भी संत कबीर दास जी के संदेश बड़े ही प्रासंगिक हैं। आज के आपाधापी और दौड़-भाग वाली जिंदगी में अशांति, भटकाव और तनाव का साम्राज्य है, कबीर का सरल, लेकिन गहन आध्यात्मिक दृष्टिकोण मनुष्य को अंदर की ओर मुड़ने की प्रेरणा देता है। उनका संदेश है- आडंबर छोड़ो, आंतरिक शुद्धता वाला आचरण अपनाओ। जाति, धर्म का भेदभाव छोड़ समानता की भावना का प्रचार-प्रसार करो। बाहरी

कर्मकांड में नहीं, हृदय की साधना में लीन हो जाओ। कबीर दास जी आज हमें स्मरण कराते हैं कि मानव जीवन अनमोल है। इसे आध्यात्मिक साधना द्वारा निर्मल बनाना चाहिए ताकि जब अंत समय आए तो हम भी प्रभु द्वारा प्रदान किए गए मानव शरीर रूपी निर्मल चादर को बिना दाग लगाए, वैसा ही लौटा सकें, जैसा परमात्मा ने दिया था।

चदरिया झीनी रे झीनी। यह चादर बहुत महीन है, इसे जतन से संभालना ही जीवन की सार्थकता है। कबीर दास का संपूर्ण जीवन हमें यह सिखाता है कि सत्य, प्रेम और भक्ति के मार्ग पर चलते हुए हम भी अपनी आत्मा को निर्मल बना सकते हैं। उनकी वाणी आज भी गूंजती है और हर साधक को प्रेरित करती है-

**जिन खोजा तिन पाइयां, गहरे पानी पैठ।
मैं बौरी ढूबन डरी, रही किनारे बैठ।**

सच्चा साधक वही है जो साधना की गहराई में उतरने का साहस करे, अपने भीतर उतरकर सत्य को खोजे। कबीर दास जी ने न डिगने वाली साधना से यह कर दिखाया, और अंततः निर्वाण को प्राप्त हुए।

कबीर ने हिंदू-मुसलमान और ऊँच-नीच से ऊपर उठकर सभी को बिना किसी स्वार्थ के रास्ता दिखाया और अपनी स्पष्ट तथा तीखी वाणियों के द्वारा चेताया-

**हिंदू कहै मोहि राम प्यारा, तुर्क कहै रहमाना।
आपस में दोऊ लड़ मुए, मर्म न काहू जाना॥**

उनका कहना था कि अज्ञानतावश हम आपस में लड़ रहे हैं, किन्तु मर्म को नहीं समझना चाहते जो मर्म को समझ जाता है। उसका भाव सभी के प्रति समतापूर्व हो जाता है-

**कबीरा खड़ा बाज़ार में, मांगे सबकी खैर।
न काहू से दोस्ती, न काहू से बैर॥**

यही भाव हमारे ऋषि-मुनियों का भी रहा-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग् भवेत्॥

यही सर्व कल्याण की भावना वर्तमान मानव समाज में जागृत करनी है, तभी हम सही मायने में कबीर के अनुयायी कहने के अधिकारी होंगे। उनकी इस पावन जयंती पर आइए, हम सब भी संकल्प लें कि अपने मानव तन की चादर को स्वच्छ बनाएँगे और साधना के पथ पर अग्रसर होंगे। ■

सुभूति बुद्ध के प्रमुख शिष्यों में थे और लंबे समय से अपने गुरु की शिक्षाओं का प्रचार करना चाहते थे। एक सुबह जेतवन में उन्होंने इसके लिए बुद्ध से अनुमति मांगी। बुद्ध ने कहा- ‘शिक्षक बनना आसान नहीं है। भले ही तुम सुंदर शब्द बोल रहे हो, बहुत से लोग तुम्हारी आलोचना और निंदा करेंगे।’ सुभूति बोले, ‘हे शास्ता, आपके आशीर्वाद से मुझे यकीन है कि इसका मुझ पर कोई असर नहीं होगा। क्या मुझे तथागत की अनुमति है?’ बुद्ध कुछ मिनटों तक चुप रहे, फिर पूछा, ‘क्या होगा, अगर तुम किसी गांव में पढ़ाने जाओ, और लोग तुम्हारी बात न सुनें?’ ‘प्रभु, मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी। कम से कम वे मुझ पर आरोप नहीं लगा रहे हैं।’ ‘अगर वे आरोप लगाने लगें तो?’ ‘मैं फिर भी मुस्कुराऊँगा। मैं खुद को याद दिलाऊँगा कि उन्होंने मेरी पिटाई तो नहीं की।’ ‘अगर पिटाई कर दें तो?’ ‘मैं तथागत की कृपा से फिर भी ठीक रहूँगा। कम से कम उन्होंने मुझे चाकू तो नहीं मारा!’ ‘अगर वे चाकू मार देते हैं तो सुभूति?’ ‘मैं यह सोचकर खुश हो जाऊँगा कि उन्होंने मुझे जान से नहीं मारा है।’ और अगर वे तुम्हें मार देते हैं तो क्या होगा?’ अब आंखों में आंसू लेकर सुभूति बोले, ‘मुझे बहुत खुशी होगी, तथागत। आपके संदेश को फैलाते हुए मरने से बेहतर निवारण के बारे में मैं सोच नहीं सकता।’ ‘सुभूति,’ बुद्ध ने आसन से उठकर उसे गले लगाते हुए कहा, ‘तुम शिक्षक बनने के योग्य हो। मैं तो केवल तुम्हारे धैर्य की परीक्षा ले रहा था। तुम्हारे अंदर एक महान

कार्य करने की सारी क्षमता मौजूद है।’ जो दूसरों का हित करना चाहते हैं, उन्हें मान-अपमान से

दूर रहकर सर्वस्व समर्पण का भाव रखना चाहिए, तभी वे वास्तव में परमार्थ मार्ग में सफल हो सकते हैं। अध्यात्म ज्ञानोपदेश देने वाले प्रत्येक साधु-महात्मा के अन्दर ऐसा ही पवित्र भाव और दृढ़ निश्चय होना चाहिए, तभी वह सही अर्थ में अध्यात्म ज्ञान प्रचार करने योग्य बन सकेगा। ■

भाव हो तो ऐसा

जून, 2025 के पर्व-त्योहार

- 5 जून गुरुवार- गंगा दशहरा □ 6 जून शुक्रवार-निर्जला एकादशी □ 11 जून बुधवार- संत कबीर जयंती/ ज्येष्ठ पूर्णिमा □ 21 जून शनिवार- योगिनी एकादशी □ 25 जून बुधवार- आषाढ़ अमावस्या □ 27 जून शुक्रवार- श्री जगन्नाथ रथयात्रा

तैनें हीरा सो जनम गंवायो

तैनें हीरा सो जनम गंवायो, भजन बिन बावरे।
 कबहुं न आयो संत शरण में, कबहुं न हरि गुण गायो।
 बहि बहि मरो बैल की नाई, सोइ रह्यो उठि खायो॥ 1 ॥
 यह संसार हाट बनिये की, सब जग सौदा लायो।
 चातुर माल चौगुना कीन्हों, मूरख मूल गंवायो॥ 2 ॥
 ये संसार फूल सेंमर का, सूआ देख लुभायो।
 मारी चोंच रुई निकसाई, सिर धुन धुन पछितायो॥ 3 ॥
 ये संसार माया का लोभी, ममता महल चिनायो।
 कहत कबीर सुनो भाई साधो, हाथ कछु नहिं आयो॥ 4 ॥

परमाराध्या माताश्री राजेश्वरीदेवी जी की जयंती पर आयोजित विशाल जनकल्याण समारोह संपन्न श्री माता जी के उपदेशों को जन-जन तक पहुँचायें- माताश्री मंगला जी

श्री हंसलोक आश्रम, भाटी, नई दिल्ली। परमाराध्या माताश्री राजेश्वरी देवी जी की जयंती “मातृ शक्ति दिवस” के शुभोपलक्ष में श्री हंसलोक आश्रम, भाटी, नई दिल्ली में 5 व 6 अप्रैल को विशाल

व्यवस्था, चिकित्सा व्यवस्था तथा प्रवेश द्वारों को वस्त्र, पुष्प, पत्र तथा सुंदर बैनर से सुसज्जित किया गया था। दो दिन पहले से ही प्रेमीभक्तों का आने का सिलसिला शुरू हो गया था जो 5 अप्रैल की शाम

किया। तत्पश्चात् सभी को परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

अगले दिन प्रातःकाल से ही वेदमंत्रों की दिव्य ध्वनि के साथ सम्पूर्ण समारोह



माताश्री राजेश्वरी देवी की जयंती “मातृ शक्ति दिवस” के सुअवसर पर आयोजित विशाल जनकल्याण समारोह में
भजन प्रस्तुत करते हुए परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं मंच पर विराजमान माताश्री मंगला जी

जनकल्याण समारोह आयोजित किया गया जिसमें भारत के कोने-कोने तथा नेपाल राज्य से लगभग 10 हजार प्रेमीभक्तों, श्रद्धालुओं, जिज्ञासुओं और साधु-संतों ने सहर्ष भाग लिया। हंसज्योति ए यूनिट ऑफ हंस कल्चरल सेंटर के तत्वावधान में आयोजित इस जनकल्याण समारोह की तैयारियां होली के अगले दिन से ही शुरू हो गयी थीं। समारोह के लिए सुंदर मंच, पंडाल, भोजनालय, आगन्तुकों के लिए आवास, आने-जाने के लिए वाहन

तक अनवरत चलता रहा। समारोह की पूर्व संध्या यानी 5 अप्रैल को परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी के सानिध्य में श्री हंसलोक सेवक/सेविकाओं और जूनियर सेवकों का मार्गदर्शन शिविर आयोजित किया गया जिसमें लगभग 500 सेवक/सेविकाओं ने भाग लेकर मार्गदर्शन प्राप्त किया। परमपूज्या माताश्री मंगला जी ने सेवक/सेविकाओं को सम्बोधित कर उन्हें समारोह में आए सभी जनों की हर प्रकार से सेवा-सुश्रूषा करने के लिए प्रोत्साहित

परिसर गुंजायमान हो उठा। सभी नित्य-कर्म से निवृत्त होकर अपने इष्टदेव की आरती-पूजा और ध्यान-सुमिरण में निमग्न हो गये। प्रेमीभक्तों के समूह लगातार आश्रम परिसर में प्रवेश कर रहे थे। इस तरह लगातार प्रेमीभक्तों के आगमन से संपूर्ण परिसर भर चुका था। सायंकाल ठीक समय पर श्री गणेश वंदना और गुरु वंदना के साथ विशाल जनकल्याण समारोह का शुभारंभ हुआ। प्रसिद्ध गायकों द्वारा ज्ञान, वैराग्य, भक्ति और चेतावनीयुक्त सुंदर भजनों की प्रस्तुति आरंभ

हुई, “गफलत में सोने वाले, नर जन्म ना गंवाना”, तथा “तूने हीरा सा जन्म गंवाया, भजन बिना बावरे।” आदि भजनों के माध्यम से मनुष्य की चेतना को जागृत करने का प्रयास किया गया। प्रेमीभक्तों से खचाखच भरे पंडाल का भव्य दृश्य सभी को आकर्षित कर रहा था। महात्मा शिवकृपानंद

माताश्री राजेश्वरी देवी जी का प्रिय भजन “भाव का भूखा हूँ मैं, और भाव ही एक सार है।” गाया तो उसकी स्वर-लहरियों से संपूर्ण वातावरण गुंजायमान हो उठा। पंडाल में उपस्थित प्रेमीभक्त भी भावविभोर होकर श्री महाराज जी के स्वर में स्वर मिलाकर भजन गाने में मस्त हो गये। ऐसा लग रहा

शक्ति थीं जो अपने परमार्थ और परोपकारी कार्यों तथा अध्यात्म ज्ञान प्रचार-प्रसार के माध्यम से मानव समाज में अपनी महान छवि बनाकर चली गयीं। उनके उन कार्यों से हम भी शिक्षा लेकर उनके ही पदचिन्हों पर चलते हुए मानव सेवा और अध्यात्म ज्ञान के प्रचार-प्रसार में दिन-रात लगे



माताश्री राजेश्वरी देवी की जयंती “मातृ शक्ति दिवस” के सुअवसर पर आयोजित विशाल जनकल्याण समारोह में भजन एवं प्रवचन श्रवण करते हुए प्रेमी भक्तगण

जी और महात्मा आत्मसंतोषीबाई जी का सत्संग हुआ। इसी बीच परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी का मंच पर पदार्पण हुआ। सद्गुरुदेव महाराज की जय, परमपूज्य श्री भोले जी महाराज की जय और परमाराध्या माता श्री मंगला जी की जय-जयकार से संपूर्ण वातावरण गूंज उठा। माताजी और महाराज जी सभी को आशीर्वाद देते हुए मंचासीन हुए। फिर एक भजन “तन चलता फिरता मंदिर है, भगवान इसी के अंदर है।” तथा “जिसने तुम्हें हे माता हाजिर हुजूर देखा।” गाया गया।

तत्पश्चात परमपूज्य श्री भोले जी महाराज ने अपनी सुमधुर वाणी में जगतजननी

था कि स्वयं श्री माता जी विराजमान होकर अपनी दिव्य वाणी से हम सबको निहाल कर रहे हों। संपूर्ण वातावरण में श्री माता जी की दिव्य छवि उभरकर आ रही थी। इसके बाद एक भजन “मुझे कौन पूछता था, तेरी बंदगी से पहले।” हुआ, जिसे सभी ने झूम-झूमकर गाया।

इसके बाद परमाराध्या माताश्री मंगला जी का सारगर्भित प्रवचन शुरू हुआ। प्रेमीभक्तों से खचाखच भरे पंडाल को सम्बोधित करते हुए माताश्री मंगला जी ने कहा कि आज हम जगतजननी श्री माता जी की जयंती मना रहे हैं। महापुरुषों की जयंती मनाने से उनके महान कार्यों को याद किया जाता है। श्री माता जी भी ऐसी ही महान

हुए हैं। योगिराज श्री हंस जी महाराज के अंतर्धान होने के बाद श्री माता जी ने समस्त प्रेमीभक्तों एवं हंस परिवार को ढाढ़स ही नहीं बंधाया बल्कि अपनी सूझाबूझ, विवेक और अहर्निश परिश्रम से उसे संगठित कर शक्ति व विस्तार प्रदान किया। माताश्री मंगला जी ने कहा कि श्री माता जी की अक्सर अपने प्रवचन के बीच अपना प्रिय भजन “भाव का भूखा हूँ मैं, और भाव ही एक सार है।” गाकर बताती थीं कि भक्ति मार्ग में भाव ही प्रधान है। भाव से जो भक्त भगवान को याद करता है, भगवान भी उसका ख्याल रखता है। उन्होंने कहा कि जब महापुरुष संसार में होते हैं, तो लोग उन्हें नहीं पहचानते। जब वे संसार में महान कार्य कर चले जाते हैं,

तो लोग पछताते हैं कि हम उन्हें उस समय क्यों नहीं पहचान पाए। हमारे बीच, हमारे साथ, हमारे जैसी ही वेशभूषा में रहकर महान कार्य करते रहे, अपने दिव्य ज्ञान से मनुष्यों के जीवन को महान बनाते रहे। जो उन्हें पहचान पाए, वे ही उनसे लाभ प्राप्त कर सके।

माताश्री मंगला जी ने कहा कि संत-महापुरुष अध्यात्म ज्ञान के माध्यम से समाज को ज्ञानवान, भक्तिवान और विवेकवान बनाकर उन्हें सद्मार्ग पर अग्रसर करते हैं। वे परमार्थी होते हैं। सदैव मानव के लौकिक और पारलौकिक कल्याण में सलंगन रहते हैं। वे समस्त सृष्टि के कल्याण की कामना करते हैं और उसी के लिए निरंतर संघर्षरत रहते हैं। श्री माता जी अक्सर सुनाया करते थे कि यह मनुष्य शरीर परमात्मा की भक्ति के लिए मिला है, यदि हम इस समय चूक गए तो फिर पछताना पड़ेगा। वे गुरु नानक देव जी का यह दोहा सुनाकर मानवमात्र को चेताते थे- “जागे रे जिन जागना, अब जागर की बार। फिर क्या जागे नानका, जब सोवे पांव पसार॥” समय रहते जो जाग गया, वह संसार के दुःखों से छूट गया और जो समय को न पहचान सका, वह फिर पछताता ही है। इस प्रकार माताश्री मंगला जी लगातार एक घंटे तक धाराप्रवाह अपने मंगलमय प्रवचनों के माध्यम से श्रोतागण की सुषुप्त चेतना को जागृत करते रहे। माताश्री मंगला जी ने कहा कि श्री माता जी के द्वारा अध्यात्म ज्ञान और मानव सेवा की जो धारा प्रवाहित की गयी थी, वह आज भी अनवरत रूप से प्रवाहमान है। इस प्रकार अनेक प्रेरक संस्मरणों के द्वारा श्री माता जी का स्मरण करते हुए माताजी ने अपने प्रवचन का समापन किया। चेतावनीयुक्त भजनों “कर ले भजन की कमाई, क्या है भरोसा इस देह का” तथा “छोड़कर संसार जब तू जायेगा, कोई ना साथी तेरा साथ निभायेगा।” के पश्चात प्रथम दिवस का कार्यक्रम संपन्न हुआ।

अगले दिन अर्थात् 6 अप्रैल को परमाराध्या माता श्री राजेश्वरी देवी की जयंती “मातृ शक्ति दिवस” के सुअवसर पर श्री माता जी का पुण्य स्मरण करते हुए उनके श्री चरणों में शत-शत नमन करते हुए अमृत प्रभात बेला में जनकल्याण समारोह की गतिविधियां आरंभ हुईं। कई महीनों से महात्मा/बाईंगण का सत्संग सुनकर आत्म जिज्ञासु बने श्रद्धालुओं को महात्मागण द्वारा आत्मज्ञान का व्यावहारिक बोध कराया गया। तत्पश्चात दिव्य विभूतियों के दिव्य दर्शन का सभी को सौभाग्य प्राप्त हुआ। परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी के दर्शनों के लिए प्रेमीभक्तों की लंबी कतारें लगी हुई थीं, जो चातक की भाँति एकटक दिव्य विभूतियों के दर्शन की आकांक्षा लिए भजन-कीर्तन गाते और जय-जयकार करते हुए अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त कर रहे थे। संपूर्ण वातावरण भक्तिमय भावनाओं से परिपूर्ण था। मंच से भजन गायक महिमायुक्त भजनों के माध्यम से श्री सद्गुरु महाराज एवं श्री माता जी की महिमा को प्रचारित कर रहे थे। सभी प्रेमीभक्त भी पूर्ण आनंद और मस्ती में झूम-झूमकर नाच-गा रहे थे। दिव्य विभूतियों के दर्शनों का सिलसिला शुरू हुआ जो लगातार तीन घंटे तक चलता रहा। इसी बीच नेपाल से पथरे भक्तों ने अपनी भाषा में लोक गीत गाकर परंपरागत वेशभूषा में नृत्य प्रस्तुत किया; जिसे देख-सुनकर उपस्थित प्रेमीभक्त भी भावविभोर और आनंदित होकर अपने भाग्य की सराहना कर रहे थे। सभी को लड्डू प्रसाद भी प्रदान किया गया। भंडारा लगातार चल रहा था जिसमें स्वादिष्ट भोजन प्रसाद सभी को उपलब्ध कराया गया। इसी प्रकार जरूरतमंदों के लिए निःशुल्क चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई गयी थी। चिकित्सकों की टीम अपने सहायकों तथा एम्बूलेंसों के साथ दिन-रात सेवा में संलग्न थी।

सायंकाल द्वितीय दिवस गुरु वंदना के

साथ कार्यक्रम शुरू हुआ। देश के अलग-अलग स्थानों से पथरे भजन गायकों ने अपने चेतावनी और ज्ञानयुक्त भजनों से जनसमुदाय को सत्य ज्ञान को जानने के लिए प्रेरित किया। भजन गायकों द्वारा “भक्ति करत छूटें मेरे प्राण, प्रभु जी यही मांगूँ मैं।” तथा “हरि नाम सुमिर सुखधाम, जगत में जीवन दो दिन का।” प्रेरणादायक भजनों के गायन के बाद श्री मंगल जी का सत्संग हुआ। श्री मंगल जी ने बताया कि श्री माता जी का प्रादुर्भाव नवरात्रों के सुअवसर हुआ था। वे बचपन से ही एक दिव्य बालिका थीं। श्री हंस जी महाराज के साथ पाणिग्रहण के पश्चात उनके दिव्य व्यक्तित्व को प्रेमीभक्तों और महात्मा/बाईंगण ने प्रत्यक्ष रूप से अनुभव किया। वे एक ऐसी माता थीं, जो अलौकिक होने के पश्चात भी लौकिक व्यवहार में परांगत थीं। सभी के साथ सद्भाव पूर्ण व्यवहार करना, किसी दीन-दुःखी को देखकर द्रवित होकर उसके दुःख को दूर करना तथा सदैव सबके प्रति करुणापूर्ण रहना ही उनका स्वभाव था। जिन भक्तों ने उनके दर्शन किए तथा उनका सानिध्य प्राप्त किया वे आज भी उनकी महिमा गाए बिना नहीं रह सकते। तत्पश्चात निम्न भजनों “संदेशा संत फकीरों का, तुम्हें याद कोई दिन आएगा।” तथा “सुनो सुनो बचन नर नारी, हरि भजन करो सुखकारी॥” के प्रेरणादायक संदेश के साथ सत्संग का क्रम अनवरत चलता रहा।

संपूर्ण पंडाल खचाखच भर चुका था, जिधर देखो उधर सिर ही सिर नजर आ रहे थे। शांत, स्तब्ध और आनंद में बैठे भक्तगण दिव्य विभूतियों के पथरने की प्रतीक्षा कर रहे थे। जैसे ही दिव्य विभूतियां मंच पर पथरीं संपूर्ण वातावरण जय-जयकार की मधुर ध्वनि से गूंज उठा। सभी ने अपना मस्तक झुकाकर उन्हें प्रणाम किया और अपने आपको धन्य माना कि अपने नेत्रों से महापुरुषों के दर्शन कर पा रहे हैं। दिव्य विभूतियों को अपने बीच पाकर प्रेमीभक्तों

के हृदय कमल खुशी और आनंद से खिल उठे और वे उच्च समवेत स्वर में उनकी जय-जयकार करने लगे। एक भजन हुआ; तत्पश्चात करुणामयी माता श्री मंगला जी का प्रवचन आरंभ हुआ। प्रेमीभक्तों को सम्बोधित करते हुए माता श्री मंगला जी

माताश्री मंगला जी ने परमाराध्या माता श्री राजेश्वरी देवी का स्मरण करते हुए कहा कि हम सबने श्री माता जी से पग-पग पर शिक्षा ग्रहण की है और आज हम उन्हीं के दिखाए मार्ग पर निरंतर आगे बढ़ते जा रहे हैं। श्री माता जी अध्यात्म ज्ञान के प्रचार-प्रसार

उनकी सेवा करने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैंने उनके सानिध्य में रहकर अध्यात्म ज्ञान प्रचार और मानव सेवा की शिक्षा प्राप्त की, उनका आशीर्वाद सदैव मेरे ऊपर रहा है। आज उनकी ही शिक्षा, प्रेरणा और आशीर्वाद से हम धर्म के प्रचार और मानव सेवा के



**माताश्री राजेश्वरी देवी की जयंती “मातृ शक्ति दिवस” के सुअवसर पर आयोजित विशाल जनकल्याण समारोह में
मंच पर विराजमान महात्मा/बाईंगण एवं भजन प्रस्तुत करते हुए गायक कलाकार**

ने कहा कि संत-महात्मा मानव समाज को जगाने के लिए आते हैं। वे बताते हैं कि यह जीवन अमूल्य है। यह एकमेव परमात्मा की भक्ति और उनकी प्राप्ति के लिए मिला है। इसलिए समय रहते हमें इस उद्देश्य की पूर्ति कर लेनी चाहिए अन्यथा एक दिन यह संसार छोड़कर जाना होगा, फिर हम चाहकर भी कुछ नहीं कर पाएंगे। उन्होंने कहा कि जब हमारा जन्म होता है तो डॉक्टर बता देता है कि किस दिन बालक का जन्म होने वाला है; किन्तु मृत्यु के बारे में कोई डॉक्टर, ज्योतिषी और भविष्य वक्ता नहीं बता सकता कि हमें कब यह संसार छोड़कर जाना होगा। ऐसे अनिश्चित जीवन को व्यर्थ न गंवायें। यह जीवन हमें परमात्मा का भजन करने के लिए मिला है। इसलिए मन को संसार की विषय वासनाओं से हटाकर परमात्मा के ध्यान-सुमिरण में लगाओ।

के साथ दीन-दुःखियों और जरूरतमंदों की सेवा को बहुत महत्व देते थे। वे जब किसी बीमार, लाचार और दीन-दुःखी को देखते तो उनकी मानवीय संवेदनाएं जागृत हो जाती थीं, उनकी भावना रहती थी कि मैं कैसे, किस प्रकार इनके दुःखों का हरण कर पाऊँ। आज उन्हीं की शिक्षा और संस्कारों पर चलकर हम श्री भोले जी महाराज के साथ सेवा के मार्ग पर अग्रसर हैं।

माताश्री मंगला जी ने कहा कि हम अपने घर के कार्य करने के लिए नौकर रख सकते हैं किन्तु परमात्मा का भजन और भक्ति हमें स्वयं करनी होगी। यदि भगवान के भजन की कमाई नहीं की, तो हमें खाली हाथ ही जाना होगा। इसलिए मनुष्य जीवन को सार्थक बनाने के लिए प्रभु भजन की कमाई करो। माता श्री मंगला जी ने कहा कि श्री माता जी ने मुझे अपनी बेटी समझा।

कार्यों को व्यापक स्तर पर कर पा रहे हैं। श्री माता जी का आशीर्वाद समस्त मानव जाति पर अनवरत बरस रहा है। इस प्रकार लगातार एक घंटे से अधिक समय तक माता श्री मंगला जी प्रेमीभक्तों को ज्ञान, भक्ति, सेवा और शांति व सद्गवपूर्ण व्यवहार की शिक्षा देते रहे। तत्पश्चात एक भजन **“तू सुमिरण कर ले मेरे मना, तेरी बीती उमर हरि भजन बिना”** के बाद आरती हुई; और इस प्रकार अनेक अद्वितीय और अनुकरणीय स्मृतियों की अमिट छाप हृदय पटल पर छोड़कर द्विदिवसीय जनकल्याण समारोह हर्षोल्लास के साथ निर्विघ्न रूप से संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम के आयोजन में स्थानीय पुलिस, प्रशासन, जनप्रतिनिधियों, गणमान्यजनों, श्री हंसलोक सेवकों, कार्यकर्ताओं, महात्मा/बाईंगण, प्रचारकों तथा प्रेमीभक्तों का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ। ■

परमपूज्य श्री भोले जी महाराज के पावन जन्म-दिवस पर विशाल जनकल्याण समारोह 26 व 27 जुलाई, 2025 को

सभी भगवद्भक्तों को यह जानकर अपार हर्ष होगा कि **दिनांक 26 एवं 27 जुलाई, 2025** (शनिवार एवं रविवार) को परमपूज्य श्री भोले जी महाराज का पावन जन्म-दिवस श्री हंसलोक आश्रम, बी-18, भाटी माइन्स रोड, भाटी, छत्तरपुर, नई दिल्ली में धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस सुअवसर पर 26 व 27 जुलाई को **विशाल जनकल्याण समारोह** सायं 6 से 9 बजे तक आयोजित किया जायेगा जिसमें **परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं डॉ. माताश्री मंगला जी** के अध्यात्म-ज्ञान तथा जनकल्याण पर सारगर्भित प्रवचनों के साथ महात्मा/बाईंगण का भी सत्संग होगा और प्रसिद्ध गायकों द्वारा भजन-गायन भी होगा। इस अवसर पर आत्म-जिज्ञासुओं को अध्यात्म-ज्ञान का व्यावहारिक बोध भी कराया जाएगा।

अतः आप सब अपने इष्ट-मित्रों एवं परिजनों सहित अधिक से अधिक संख्या में पथारकर पावन जन्मोत्सव एवं जनकल्याण समारोह से आनन्द व आत्म-लाभ प्राप्त करें।

-कार्यक्रम:-

26 जुलाई, 2025 (शनिवार) सायं 6 से 9 बजे सत्संग-प्रवचन-भजन

27 जुलाई, 2025 (रविवार) सुबह 10 बजे से पूजन एवं दर्शन
सायं 6 से 9 बजे सत्संग-प्रवचन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम

स्थान- श्री हंसलोक आश्रम, बी-18, भाटी माइन्स रोड,
भाटी, छत्तरपुर, नई दिल्ली-110074

निवेदक- हंसज्योति (ए यूनिट ऑफ हंस कल्चरल सेंटर), नई दिल्ली
संपर्क-8800291788, 8800291288

इस जनकल्याण समारोह का सीधा प्रसारण हंसलोक T.V. www.youtube.com/@hanslokTV
पर दोनों दिन सायं 6 से रात्रि 9 बजे तक किया जायेगा। <https://www.facebook.com/Hanslok>

श्री हंसलोक सेवक सूचना

सभी श्री हंसलोक सेवक/सेविकाओं तथा जूनियर सेवकों को सूचित किया जाता है कि परमपूज्य श्री भोले जी महाराज के पावन जन्म-दिवस के सुअवसर पर 26 व 27 जुलाई, 2025 को श्री हंसलोक आश्रम, भाटी माइन्स रोड, भाटी, छत्तरपुर, नई दिल्ली में विशाल जनकल्याण समारोह का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर श्री हंसलोक सेवक/सेविकाओं का **25 से 28 जुलाई, 2025** तक “सेवा शिविर” लगाया जा रहा है जिसमें सभी सेवक/सेविकाएं समारोह की व्यवस्था से संबंधित विभिन्न कार्यों में सेवा-सहयोग करेंगे। इस अवसर पर 25 जुलाई, 2025 को अपराह्न 3 बजे से श्री हंसलोक सेवकों का ‘मार्गदर्शन शिविर’ रखा गया है जिसमें सभी सेवक/सेविकाओं का भाग लेना आवश्यक है। अतः सभी दस्तानायक अपने सहयोगी सेवक/सेविकाओं के साथ 24 जुलाई की शाम तक अथवा 25 जुलाई, 2025 की प्रातः 8 बजे तक श्री हंसलोक आश्रम, नई दिल्ली अवश्य पहुँच जायें और सौपी गयी सेवा को संभाल लें। हमें आप सबका भरपूर सहयोग ऊपेक्षित है।

निवेदक

श्री हंसलोक सेवक संगठन



पौड़ी, उत्तराखण्ड। द हंस फाउंडेशन के तत्वावधान में 2 मार्च, 2025 को द हंस फाउंडेशन जनरल अस्पताल, सतपुली के प्रांगण में **तीसरा हंस बाल मेला-2025** का आयोजन किया गया। इस अवसर पर क्षेत्र के अनेक शिक्षण संस्थानों से पधारे सैकड़ों बालक एवं बालिकाओं ने भाग लिया। बालकों की प्रतिभा विकास के लिए विभिन्न प्रकार की सांस्कृतिक एवं खेल प्रतियोगिताओं का भी आयोजन हुआ। प्रेरणाश्रोत परमपूज्य श्री भोले जी महाराज व माता श्री मंगला जी ने बच्चों को पुरस्कार प्रदान कर उन्हें आगे अच्छा खेल का प्रदर्शन करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि बच्चे हमारे परिवार, समाज व देश का भविष्य हैं, ये ही हमारी संस्कृति और परंपरा को आगे ले जाएंगे।

गंगा दशहरा की हार्दिक शुभकामनाएं

गंगा दशहरा के दिन ही माँ गंगा राजा भगीरथ की तपस्या के फलस्वरूप भगवान शंकर की जटाओं से निकलकर धरती पर अवतरित हुई। गंगा केवल जीवनदायिनी ही नहीं बल्कि वह सभी पापों को नष्ट करती है। जन्म से लेकर मृत्यु तक गंगा साथ निभाती है। गंगा दशहरा के दिन गंगा स्नान और दान-पुण्य करने से व्यक्ति पुण्य का भागी बनता है। इसी तरह जब साधक सद्गुरु प्रदत्त ज्ञान गंगा में ध्यान-सुमिरण के माध्यम से स्नान करता है, तो वह अपने समस्त पाप-विकारों का नाश कर मोक्षगामी हो जाता है। पाप-विकारों से मुक्ति प्राप्त करना ही गंगा दशहरा पर्व मनाने का मुख्य उद्देश्य है। गंगा दशहरा की सभी को बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

- परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माता श्री मंगला जी



आध्यात्मिक सत्संग-भजन कार्यक्रम के वीडियो **YouTube** पर उपलब्ध हैं। **YouTube** पर **HANSLOKTV** चैनल को अवश्य सब्सक्राइब करें और श्री भोले जी महाराज व माता श्री मंगला जी तथा संत-महात्माओं के सत्संग-भजन से आत्मलाभ प्राप्त करें।



MOB: 8800291788 / 8800291288



/hanslok